वस्त्र उद्योग का सर्वाधिक लोकप्रिय समाचार-पत्र

टेक्सटाइल मिरर

अखिल भारतीय संस्करण

Postal Regd. No.: Bhilwara/231/2024-2026

पाक्षिक

वर्ष : 14 अंक : 19 प्रकाशित : 1 दिसंबर, 2025 सोमवार Editor : Govind Sharma स्थान : भीलवाड़ा पृष्ठ : 20 मूल्य : 20 रुपये

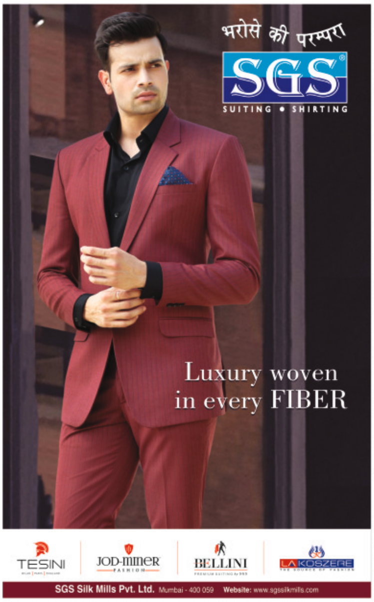

भारत में रेकॉर्ड कॉटन आयात बढ़ा

ड्यूटी-मुक्ति और घरेलू उत्पादन में गिरावट का असर

नई दिल्ली/प्रवीण राणा

भारत में कॉटन (कपास) आयात इस वित्तीय वर्ष में रिकॉर्ड स्तर तक पहुंचने की संभावना है, क्योंकि टेक्सटाइल मिलों ने विदेश से सस्ता कपास मंगाने की ओर रुख बढ़ा दिया है। रॉयटर्स की रिपोर्ट के अनुसार, 2025/26 मार्केटिंग वर्ष में कॉटन आयात लगभग 4.5 मिलियन बैल तक पहुंच सकता है, यह पिछले साल के 4.1 मिलियन बैल से ऊपर है।

इस वृद्धि का मुख्य कारण है सरकार द्वारा कॉटन आयात पर लगाए गए 11 प्रतिशत टैक्स (बुनियादी कस्टम ड्यूटी, कृषि अवसंरचना एवं डेवलपमेंट सेस और सामाजिक कल्याण अधिभार) को 31 दिसंबर 2025 तक बढ़ा देना।

यह टैक्स राहत मिलों को विदेश से सस्ते कपास आयात करने की छूट देती है और उनकी इनपुट लागत को कम करती है।

दूसरी ओर, घरेलू कॉटन उत्पादन इस साल 17 साल के निचले स्तर पर गिरने का अनुमान है।

स्थानीय उत्पादन में यह कमी कुछ प्रमुख कपास-उत्पादक राज्यों जैसे महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में अक्टूबर में हुए असामयिक और भारी बारिश के कारण हुई बताई जा रही है, जिनसे फसल को नुकसान पहुंचा।

टेक्सटाइल उद्योग के लिए यह आयात वृद्धि दोतरफ़ा असर ला सकती है। एक ओर, यह मिलों को कच्चे माल की लागत कम करने में मदद करेगी और उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाएगी। दूसरी ओर, घरेलू कपास किसानों के लिए यह एक बड़ी चुनौती बन सकती है, क्योंकि विदेशी कपास सस्ता होने की वजह से घरेलू बाज़ार में उनकी फसल की मांग और मूल्य दब सकते हैं।

इसके अलावा, इंडस्ट्री ऑफिशियल्स यह भी बता रहे हैं कि निर्यात दबाव है, कुछ टेक्सटाइल इकाइयों को अमेरिका द्वारा लगाए गए उच्च टैरिफ (लगभग 50 प्रतिशत) का भी सामना करना पड़ रहा है, जिससे उन्हें कम लागत में कच्चे माल उपलब्ध कराने की आवश्यकता बढ़ गई है।

विश्लेषकों का कहना है कि अगर यह ट्रेंड जारी रहा, तो भारत के टेक्सटाइल सेक्टर को लागत-संवेदनशीलता में बेहतर प्रबंधन करना होगा और साथ ही, किसानों और मिलों के हितों के बीच संतुलन बनाए रखने की रणनीतियाँ विकसित करनी होंगी।

अमेरिकी टैरिफ के बाद टेक्सटाइल एवं गारमेण्ट निर्यात में गिरावट जारी

नई दिल्ली/ अमेरिका द्वारा अगस्त में भारतीय उत्पादों पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाए जाने के बाद टेक्सटाइल एवं गारमेण्ट निर्यात में गिरावट जारी है। अक्टूबर 2025 में भी टेक्सटाइल निर्यात पिछले साल की तुलना में 12.92 प्रतिशत तथा गारमेंट निर्यात 12.88 प्रतिशत गिरा है। अक्टूबर में टेक्सटाइल एवं गारमेंट का सयुंक्त निर्यात 12.91 प्रतिशत घटा है। उद्योग एवं निर्यातकों को अमेरिका और यूरोप के साथ मुक्त व्यापार समझौते का इंतजार है ताकि पूर्व की भांति निर्यात में बढ़ोत्तरी हो सके।

अगस्त 2025 में अमेरिका ने भारतीय टेक्सटाइल एवं गारमेंट पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाया है जिससे निर्यात लगातार घटने लगा है। सितम्बर में भी निर्यात घटा था और अक्टूबर में भी निर्यात लगभग 13 प्रतिशत तक गिरा है।

अक्टूबर 2025 में टेक्सटाइल निर्यात 1.59 अरब डॉलर तथा गारमेंट निर्यात 1.06 अरब डॉलर रह गया जबकि अक्टूबर 2024 में यह क्रमश: 1.83 अरब डॉलर एवं 1.22 अरब डॉलर था। अक्टूबर 2025 में टेक्सटादल एवं गारमेंट का सयुंक्त निर्यात 2.66 अरब डॉलर रह गया जो पिछले साल 3.06 अरब डॉलर था।

बहरहाल निर्यातकों को अमेरिका और यूरापीय संघ के साथ मुक्त व्यापार समझौता होने का इंतजार है। यूरोपी संघ के साथ लम्बे समय से बात चल रही है और यदि समझौता हो जाता है तो भारतीय उत्पाद प्रतिस्पर्धी देशों से प्रतिस्पर्धा कर सकेंगे।

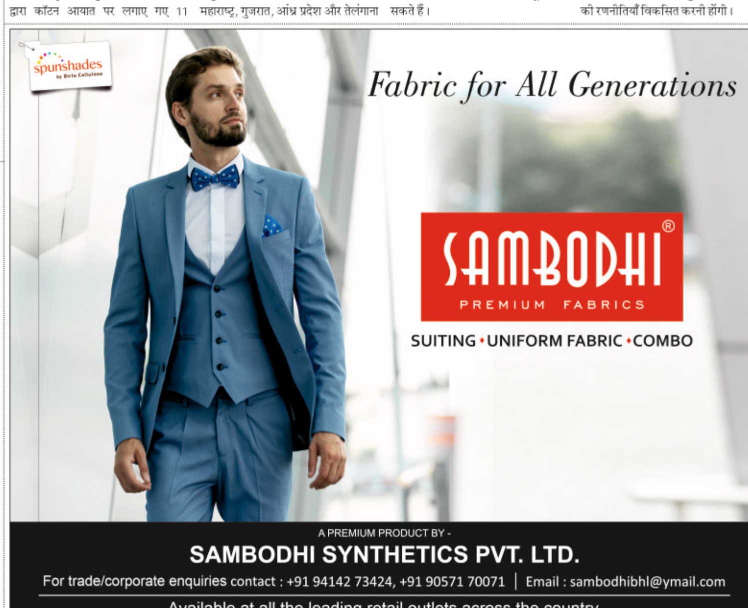

गारमेण्ट की खुदरा बिक्री सुधरी : उत्पादन क्षमता नहीं बढ़ी

मुम्बई/मिरर ब्यूरो

गारमेण्ट में वैवाहिक सीजन की ग्राहकी अच्छी होने से हाल खुदरा बिक्री बढ़ी है। मई के पहले सप्ताह तक खुदरा कारोबार में तेजी रहने की संभावना है। रिटेलर्स नई वेराइटी में मजबूत कामकाज कर रहे है। गारमेण्ट की खुदरा बिक्री धीरे-धीरे आगे बढ़ रही है। गारमेण्ट इकाइयों में कामकाज पहले की तरह होने लगा है। लेकिन कारखानों में उत्पादन अभी भी पूरी क्षमता से नहीं हो रहा है। रिटेलर्स की मांग नई वेराइटी में जरूर बढ़ी है, परंतु यह सीजन में अधिक से अधिक बिकने वाले फैंसी और एथेनिक वियर में है। वैवाहिक सीजन का पहला दौर मई के पहले सप्ताह तक होने से रिटेलर्स बड़ी खरीदी करने से बच रहे हैं और छोटे लॉट में अधिक खरीदी करने पर जोर दे रहे है।

फैंसी वेराइटी गारमेण्ट में कामकाज अधिक होने के कारण शर्ट और ट्राउजर्स की मांग नहीं बढ़ रही है। मांग में तेजी नहीं होने का दूसरा कारण मेंस वियर में प्रतिस्पर्धा अधिक है। स्वदेशी ब्रांड के साथ विदेशी ब्रांडों की बाजारों में पैठ बढ़ी है। ऑनलाइन चैनलों के मार्फत कारोबार अधिक होने से ऑफलाइन स्टोरों के कामकाज पर बुरा असर पड़ा है। विदेशी ब्राण्डों में ग्राहकों के आकर्षण का कारण मूल्य में एक जैसी समानता का होना भी है। ऊंची कीमत के गारमेण्ट पर 18 प्रतिशत जीएसटी लगने के कारण लोगों की पसंदगी विदेशी ब्रांडों की ओर बदली है। मीडियम सेग्मेंट के गारमेण्ट में कारोबार आज भी अधिक हो रहा है। वैल्यूएबल महंगे गारमेण्ट की बिक्री में अंतर जीएसटी के कारण भी है।

भारत और अमेरिका के बीच टैरिफ पर जल्द ही समाधान होने की सुगबुगाहट से निकट भविष्य में गारमेण्ट का निर्यात बढ़ने की संभावना है। अभी ऊंचे टैरिफ के कारण अमेरिका में गारमेण्ट के निर्यात को झटका लगा है, लेकिन यूरोप की ओर गारमेण्ट का निर्यात कामकाज अच्छा हो रहा है। ऐसी रिपोर्ट है कि गारमेण्ट निर्यात में लगी कुछ इकाईयों ने वैकल्पिक बाजारों और अन्य माध्यमों से निर्यात स्तर को तटस्थ रखने की कोशिश की है। भारत से अमेरिका में निर्यात घटने के बाद जहां भारत की तुलना में टैरिफ कम है, ऐसे देशों में एकाएक मांग बढ़ी है। लेकिन अब ट्रम्प की ओर से संकेत मिल रहा है कि भारत और अमेरिका के बीच बातचीत पटरी पर है और भारत के टैरिफ कम हो सकते है।

उद्योग सूत्रों का कहना है कि भले ही 50 प्रतिशत टैरिफ लगाने के बाद भारतीय निर्यातकों ने यूरोप, दक्षिण अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और सूदूर पूर्व के देशों में भारतीय कपड़ों का निर्यात बढ़ाया है। लेकिन सच है कि अमेरिका के हैवी टैरिफ के बाद भारत से गारमेण्ट एवं अन्य कपड़ों की मांग पर विपरीत असर पड़ा है। इसकी भरपाई वैकल्पिक बाजारों से नहीं हो सकती है, कारण कि अमेरिका भारत के लिए एक बड़ बाजार है। यदि भारत पर टैरिफ पहले की तरह 25 प्रतिशत कर दिया जाता है, तो भी भारत से गारमेण्ट एवं कपड़ों का निर्यात बढ़ेगा। यदि कपडों एवं गारमेण्ट के निर्यात बढ़ता है तो देश में इस क्षेत्र में नये निवेश के लिए रास्ते भी खुल सकते हैं, जो अभी धीमा पड़ा है।

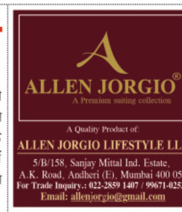

भारत के टेक्सटाइल सेक्टर को सुधार की जरूरत

नीति आयोग ने जारी की अहम सिफारिशें

नई दिल्ली/मिरर चीफ

भारत के टेक्सटाइल सेक्टर को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप मजबूत बनाने के लिए नीति आयोग ने हाल ही में जारी अपने मूल्यांकन में कई महत्वपूर्ण सुधारों की आवश्यकता बताई है। निर्वाचन विवरण के आधार पर तैयार रिपोर्ट में कहा गया है कि अगर टेक्सटाइल सेक्टर में आपूर्ति-श्रृंखला को आधुनिक और एकीकृत नहीं किया गया, लागत दक्षता नहीं बढ़ाई गई और पर्यावरणीय नियमों का सही पालन सुनिश्चित नहीं हुआ, तो वैश्विक बाजार में भारत की स्थिति कमजोर पड़ सकती है।

नीति आयोग के अनुसार भारतीय टेक्सटाइल उद्योग की सबसे बड़ी चुनौतियों में बिखरी हुई सप्लाई चेन, कच्चे माल की ऊंची लागत, पुरानी टेक्नोलॉजी पर निर्भरता और बढ़ती अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा शामिल हैं। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि कई देश, विशेषकर वियतनाम, बांग्लादेश और चीन, तेजी से टेक्निकल टेक्सटाइल और मैनमेड फाइबर के क्षेत्र में निवेश बढ़ा रहे हैं, जिससे भारत के लिए प्रतिस्पर्धा और कठिन हो रही है।

चुनाव आयोग डेटा के अनुसार, भारत में टेक्निकल टेक्सटाइल का बाजार क्षमता के मुकाबले अभी भी काफी पीछे है। देश में अभी भी पारंपरिक सूती वस्त्र उत्पादन पर अधिक निर्भरता है, जबकि वैश्विक मांग तेजी से एमएसएमई, परफ़ोरमेन्स फैब्रिक, नोन-वूवन मटेरियल, मेडिकल टेक्सटाइल, जियो-टेक्सटाइल और औद्योगिक वस्त्र की ओर बढ़ रही है। रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि इन हाई-वैल्यू सेगमेंट्स पर सरकार को अधिक नीति समर्थन, टैक्स राहत, अनुसंधान-विकास प्रोत्साहन और पूंजी निवेश योजनाएँ बढ़ानी चाहिए।

लागत दक्षता बढ़ाने को लेकर नीति आयोग ने बताया कि भारतीय मिलों में ऊर्जा लागत और लॉजिस्टिक्स खर्च कई प्रतिस्पर्धी देशों की तुलना में काफी अधिक हैं। इससे तैयार वस्त्रों की कीमतें बढ़ती हैं और निर्यात बाजार में प्रतिस्पर्धा प्रभावित होती है। रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि टेक्सटाइल क्लस्टरों में आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, सस्ती ऊर्जा योजनाओं, और कुशल परिवहन नेटवर्क को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। पर्यावरणीय नियमों के संदर्भ में, नीति आयोग ने कहा कि वैश्विक बाजार में टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल उत्पादन सबसे बड़ी आवश्यकता बन चुकी है। कई देशों में ग्रीन सप्लाई चेन के बिना ऑर्डर मिलना मुश्किल होता जा रहा है। इसलिए भारत को वेस्ट मैनेजमेंट, पानी की खपत कम करने, रीसाइक्लिंग तकनीकें अपनाने और पर्यावरणीय प्रमाणन प्रणाली को मजबूत करना होगा।

वैश्विक वस्त्र जगत का सबसे बड़ा आयोजन जुलाई 2026 में नई दिल्ली में

Bharat TEX 2026 — TEXTILES | FASHION SUSTAINABILITY

नई दिल्ली/वस्त्र मंत्रालय तथा वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय सहित अन्य वस्त्र निर्यात संवर्धन परिषदें 14 से 17 जुलाई, 2026 तक भारत मंडपम, नई दिल्ली में 'भारत टेक्स 2026' का तीसरा संस्करण आयोजित करने जा रही हैं। यह आयोजन वैश्विक स्तर पर भारतीय वस्त्र उद्योग की शक्ति, नवाचार और विविधता को प्रदर्शित करने वाला सबसे बड़ा प्लेटफॉर्म माना जा रहा है।

भारत टेक्स 2026 में देश-विदेश के 5,500 से अधिक प्रदर्शक भाग लेंगे, जबकि 7,000 से अधिक अंतरराष्ट्रीय खरीदार इस मेगा इवेंट में अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगे। प्रदर्शनी करीब 1.60 लाख वर्ग मीटर क्षेत्र में फैली होगी जिसमें 1,20,000 से अधिक व्यापारिक आगंतुकों के आने की संभावना है। आयोजन में 40 से अधिक ज्ञान सत्र भी होंगे, जिनमें विशेषज्ञ वस्त्र उद्योग के भविष्य, तकनीकी नवाचार, वैश्विक व्यापार प्रवृत्तियों और निवेश अवसरों पर चर्चा करेंगे।

यह प्रदर्शनी संपूर्ण वस्त्र मूल्य श्रृंखला फाइबर, यार्न, ग्रे एवं तैयार कपड़े, सिंथेटिक और रेयान फैब्रिक, सिल्क, वूल, होम फर्निशिंग, फ्लोर कवरिंग, एक्सेसरीज़, हैंडलूम, जूट उत्पाद और वस्त्र-आधारित हस्तशिल्प को एक ही छत के नीचे प्रदर्शित करेगी।

संपादकीय

वर्ष-14 अंक- 19

विश्व बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति बेहतर बनाने की तैयारी

भारत का टेक्सटाइल उद्योग वैश्विक बाजार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने के एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है। विश्व स्तर पर तेज़ी से बदलती मांग, कठोर होते गुणवत्ता मानक, लागत संवेदनशीलता और टिकाऊ उत्पादन की आवश्यकता ने अब यह स्पष्ट कर दिया है कि केवल उत्पादन क्षमता बढ़ाना पर्याप्त नहीं है भारत को अपनी प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को नए सिरे से परिभाषित करना होगा। हाल ही में केंद्र सरकार और मंत्रालयों द्वारा शुरू की गई पहलें यह संकेत देती हैं कि भारत अब इस दिशा में ठोस और संरचित तैयारी कर रहा है।

कच्चे माल, मजदूरी, कर संरचना और इनपुट कोस्ट पर पुनर्विचार का प्रस्ताव इसी व्यापक रणनीति का हिस्सा है। बढ़ती कपास कीमतें, यार्न बाजार में अस्थिरता, अंतरराष्ट्रीय कच्चे माल की लागत और उच्च लॉजिस्टिक खर्च भारत की प्रतिस्पर्धा क्षमता को प्रभावित करते आ रहे हैं। ऐसे में यदि सरकार लागत आधारित रिफॉर्म्स की दिशा में मजबूत नीति बनाती है तो भारतीय मिलें चीन, बांग्लादेश, वियतनाम और तुर्की जैसे देशों से मुकाबला करने की बेहतर स्थिति में आ सकती हैं।

इसके साथ ही टेक्सटाइल वैल्यू चेन के आधुनिकीकरण, एमएमएफ और टेक्निकल टेक्सटाइल में निवेश, और निर्यात प्रक्रियाओं को सरल बनाने पर केंद्रित कदम भी इस तैयारी का हिस्सा हैं। पीएलआई योजना का लक्ष्य 2030 तक भारत को टेक्निकल टेक्सटाइल और एमएमएफ आधारित वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में मजबूत स्थान दिलाना है। यदि यह रणनीति पूरी गति से लागू होती है, तो भारत पारंपरिक कपड़ों से आगे बढ़कर उच्च मूल्य वाले तकनीकी वस्त्रों में भी नेतृत्व हासिल कर सकता है।

साथ ही, सस्टेनेबल और पर्यावरण अनुकूल उत्पादन को बढ़ावा देना आज वैश्विक व्यापार की अनिवार्य शर्त बन चुका है। अंतरराष्ट्रीय ब्रांड अब 'ग्रीन सप्लाई चेन' से ही खरीद को प्राथमिकता दे रहे हैं। ऐसे में भारत की नई नीतियाँ रीसाइक्लिंग, अपशिष्ट प्रबंधन और ऊर्जा कुशल उत्पादन हमारी प्रतिस्पर्धा को और मजबूत कर सकती हैं।

अंततः, वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा केवल लागत घटाने की लड़ाई नहीं है, बल्कि नवाचार, दक्षता और गुणवत्ता की भी परीक्षा है। यदि भारत अपनी नीतियों को समयबद्ध तरीके से लागू करता है और उद्योग अपने उत्पादन मॉडल को भविष्य की जरूरतों के अनुरूप ढालता है, तो यह दशक भारतीय टेक्सटाइल उद्योग के लिए वैश्विक वर्चस्व स्थापित करने वाला दौर साबित हो सकता है। भारत तैयार है अब आवश्यकता है गति और निरंतरता बनाए रखने की।

केंद्र सरकार का मास्टर-प्लान

कच्चे माल से लेकर टैक्स तक टेक्सटाइल सेक्टर में बड़े सुधारों की तैयारी

नई दिल्ली/मिरर ब्यूरो

वैश्विक बाजार में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के बीच कपड़ा मंत्रालय ने भारतीय टेक्सटाइल उद्योग को दोबारा मजबूत बनाने के लिए एक व्यापक बहु-चरणीय मास्टर-प्लान तैयार किया है। इसका मुख्य उद्देश्य उत्पादन लागत को कम करना, सप्लाई चेन को कुशल बनाना और 2030 तक निर्यात को 100 बिलियन डॉलर स्तर पर पहुँचाना है।

मंत्रालय ने कहा है कि यदि लागत से जुड़े प्रमुख कारकों कच्चे माल, मजदूरी, टैक्स ढांचे, लॉजिस्टिक और कंप्लायंस पर संगठित तरीके से सुधार किए गए, तो भारत वैश्विक बाजार में अपनी मूल्य प्रतिस्पर्धा मजबूत कर सकेगा और निर्यात में तेज़ उछाल आएगा।

कच्चे माल की लागत घटाने के प्रयास - * सरकार ने कॉटन और एमएमएफ पर लागत स्थिर करने के लिए कई विकल्पों पर काम शुरू किया है।

* कपास की अनिश्चित कीमतों को नियंत्रित करने के लिए स्थिर मूल्य-बैकअप तंत्र पर विचार किया जा रहा है।

* एमएमएफ पर लगने वाले शुल्क की पुनर्समीक्षा शुरू हो चुकी है।

* टेक्निकल टेक्सटाइल और रीसाइकल्ड फाइबर के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए नई प्रोत्साहन योजनाएँ प्रस्तावित हैं।

* उद्योग विशेषज्ञों का मानना है कि कच्चे माल की कीमतें नियंत्रित होने से अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारत की प्रतिस्पर्धा क्षमता बढ़ेगी।

* लेबर कॉस्ट और उत्पादकता पर नया फोकस

* टेक्सटाइल सेक्टर श्रम-प्रधान है, इसलिए लेबर कॉस्ट और स्किल डेवलपमेंट दोनों पर ध्यान दिया जा रहा है।

* सरकार मजदूरी संरचना को वैश्विक औसत के अनुरूप संतुलित करने पर विचार कर रही है।

* उत्पादन बढ़ाने के लिए स्किल ट्रेनिंग, मशीन संचालित कार्य प्रणाली और तकनीकी प्रशिक्षण को व्यापक रूप से लागू किया जाएगा।

* विशेषज्ञों के अनुसार, इससे प्रति श्रमिक उत्पादकता बढ़ेगी और इकाइयों की कुल लागत घटेगी।

टैक्स ढांचे और अनुपालन में राहत की तैयारी- जीएसटी और अन्य करों से जुड़े बोझ को कम करने के लिए टैक्स ढांचे की समीक्षा शुरू हो चुकी है। कपड़ा मंत्रालय जीएसटी दरों को सरल और समान बनाने पर विचार कर रहा है।

* निर्यातकों को मिलने वाले प्रोत्साहनों को और मजबूत किया जाएगा।

* पर्यावरणीय मानकों और सस्टेनेबिलिटी कंप्लायंस की लागत कम करने के समाधान भी खोजे जा रहे हैं।

* सप्लाई चेन और लॉजिस्टिक में तेजी

* योजना में लॉजिस्टिक सुधार को विशेष महत्व दिया गया है।

* रेलवे फ्रेट नीति में बदलाव और तेज़ माल-परिवहन की व्यवस्था

* बंदरगाहों से कनेक्टिविटी में सुधार

* सप्लाई चेन का डिजिटल इंटीग्रेशन

* इन सुधारों से उद्योग को 8-12 प्रतिशत तक लागत लाभ होने का अनुमान है।

2030 का लक्ष्य- 100 बिलियन डॉलर निर्यात मंत्रालय को विश्वास है कि यदि मास्टर-प्लान समयबद्ध तरीके से लागू हुआ, तो -

* भारत की उत्पादन लागत प्रतिस्पर्धात्मक स्तर पर आएगी

* एमएसएमई और बड़े उद्योग की क्षमता बढ़ेगी

और भारत 2030 तक 100 बिलियन डॉलर के निर्यात का लक्ष्य पूरा कर सकेगा

सरकार द्वारा तैयार यह मास्टर-प्लान टेक्सटाइल उद्योग को नई दिशा देने वाला कदम माना जा रहा है, जो भविष्य में भारतीय कपड़ा उद्योग को ग्लोबल मार्केट में मजबूत स्थिति दिला सकता है।

हेड ऑफिस

'मिरर हाउस' डी-297/2,
पन्नाधाय सर्किल के पास, आजाद नगर
भीलवाड़ा-311001 (राज.)
मोबाइल : 9829085976
E-mail: textilemirror1@gmail.com

संस्थापक
श्री रामगोपाल शर्मा

प्रधान संपादक
गोविन्द नारायण शर्मा

मुंबई एसोसिएट
कीर्ति दवे

संपादकीय सलाहकार

श्री रमेश जी पोद्दार
सियाराम सिल्क मिल्स, मुंबई

श्री राजेन्द्र जी अग्रवाल
मैनेजिंग डायरेक्टर
डोनियर इण्डस्ट्रीज, मुंबई

श्री जी.डी. राठी जी
एसजीएस सिल्क मिल्स, मुंबई

श्री सुनील जी टिबरेवाल
क्यूमेक्स वर्ल्ड, मुंबई

श्री देवकीनंदन जी जिंदल
चैयरमेन, बजाज ग्रुप-मुंबई

श्री नरेश जी (मीनु) अग्रवाल
डायरेक्टर-चिनार सिन्टेक्स लि. (भिवानी)

श्री शरद जी टण्डन
एसटण्डन कंसल्टिंग, मुंबई

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक गोविन्द नारायण शर्मा द्वारा मिरर हाउस, डी-297/2, आजाद नगर, भीलवाड़ा (राज.) से प्रकाशित एवं रेनबो ऑफसेट प्रिण्टर्स, बी-3, सुदर्शनपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया, जयपुर से मुद्रित। संपादक-गोविन्द नारायण शर्मा, फोन- 98290 85976
E-mail: textilemirror1@gmail.com

सभी विवादों हेतु न्याय क्षेत्र भीलवाड़ा ही है।

वैवाहिक सीजन की ग्राहकी पहले की तुलना में कमजोर पड़ी

सूटिंग-शर्टिंग सहित सभी आईटमों की मांग

नई दिल्ली/प्रवीण राणा

बम धमाके के बाद दिल्ली की थोक मंडी चांदनी चौक में ग्राहकी की रफ्तार पर टूटी है और पहले की तुलना में वैवाहिक ग्राहकी कमजोर पड़ी है फिर भी काम अच्छा है। व्यापारियों का कहना है कि अब व्यापारी खरीददारी के लिए आने लगे हैं। आम लोगों की भीड़ जरूर कम हुई है। सूटिगं-शर्टिंग, ड्रेस मटेरियल, साड़ी एवं लहंगा की मांग बनी हुई है लेकिन पहले की तुलना में काम घटा है।

थोक एवं खुदरा बाजारों में वैवाहिक सीजन की ग्राहकी कमजोर पड़ी है। बम धमाके के बाद कुछ दिन काम ज्यादा सुस्त पड़ गया था। खरीददार दहशत की वजह से बाजार में कम आ रहे थे। अब व्यापारी आने लगे हैं लेकिन पहले की तुलना में ग्राहकी कमजोर पड़ी है।

इन दिनों कपड़े की अधिकांश आईटमों-सूटिंग-शर्टिंग, ड्रेस मटेरियल, लेडीज सूट, साड़ी, लहंगा-लांचा आदि में लग्न की ग्राहकी चल रही है। बम धमाके के बाद ग्राहकी का ग्राफ गिरा है। इससे पूर्व बाजार में ग्राहकों की अच्छी खासी भीड़ बनी हुई थी।

व्यापारियों का कहना है कि अब तक बाजार में वैवाहिक सीजन की अच्छी खासी ग्राहकी बनी हुई थी जिससे बाजार में भारी भीड़ थी और बाजार में उत्साह बना हुआ है। कपड़े की सभी आईटमों में ग्राहकी चल रही है। ग्राहकी बढ़ने के साथ भुगतान की आवक में भी सुधार होने लगा था। व्यापारियों के अनुसार वैवाहिक ग्राहकी वापिस चल रही है। व्यापारी एवं आम ग्राहक खरीददारी के लिए आ रहे हैं। कपड़े की सभी आईटमों में मांग है।

सूटिंग-शर्टिंग में कॉटन, लिनन एवं सिंथेटिक की प्लेन-सेल्फ एवं लाइनिंग में मांग है। एथेनिक फैब्रिक्स भी बिक रहा है। टीआर की भी मांग बनी हुई है। वूलन, टेरीवूल एवं ट्विड की मांग कम है। गिफ्ट पैकिंग जोड़े, सफारी एवं सूटलेंथ की मांग बनी हुई है।

व्यापारियों का कहना है कि बाजार में लग्न की ग्राहकी जारी रहने की उम्मीद है। पहले दौर के लग्न दिसम्बर तक और फिर जनवरी से लग्न के दिन हैं जिससे फिलहाल ग्राहकी बनी रहने की संभावना है।

सूटिंग-शर्टिंग में वूलन, टेरीवूल एवं टिवड की मांग कम है। कॉटन, सिंथेटिक, पीसी में प्लेन एवं सेल्फ की सर्वाधिक मांग है। इसके अलावा लाइनिंग भी बिक रही है। चैक्स की मांग कम है। टीआर में ग्राहकी बनी हुई है। एथेनिक फैब्रिक्स-लचका की मांग बनी हुई है। जोड़े, सफारी एवं कॉम्बी गिफ्ट पैकिंग में काम चल रहा है। कॉटन सूटिंग-शर्टिंग की मांग बरकरार है।

उत्तर भारत में सूटिंग-शर्टिंग की जानी-मानी एजेंसी कृष्णा एण्टरप्राइजेज एवं रजनी एण्टरप्राइजेज के श्री हंसराज गौतम के अनुसार ग्राहकी बनी रहने से कारोबार सामान्य चल रहा है और अरविंद मिल के सभी ब्राण्ड की सभी वेरायटी में अच्छा काम हो रहा है। थोक के साथ खुदरा स्तर पर ग्राहकी बनी हुई है। कॉटन, लिनन, वूलन, टेरीवूल एवं सिंथेटिक सभी प्रकार के फैब्रिक्स की मांग है।

वेलवेट होम के श्री दीपक गुप्ता के अनुसार ग्राहकी बनी हुई है। पहले की तुलना में ग्राहकी सुस्त जरूर पड़ी है फिर भी सूटिंग-शर्टिंग में लग्न की ग्राहकी बनी हुई है। प्लेन वेरायटी की मांग सर्वाधिक है। टीआर एवं एथेनिक फैब्रिक्स-लचका भी बिक रहा है। गिफ्ट पैकिंग जोड़े-सफारी एवं सूटलेंथ की मांग बनी हुई है। वूलन, टेरीवूल एवं ट्विड की मांग कम है। डार्क, लाइट एवं मीडियम सभी शेड की मांग है।

मारवा एजेंसी के श्री रघु रावत के अनुसार जार्जियो गुलिनी की सभी वेरायटी की मांग बनी हुई है। मिल की वूलन सहित सभी रेंज में ग्राहकी है। मिल ने वूलन एवं टेरीवूल में अनेक नई वेरायटी एवं नए रंग-डिजाइन बनाए हैं जिन्हे ग्राहकों का अच्छा रिस्पोंस मिला है।

झण्डूमल रतनलाल के श्री प्रदीप जैन के अनंसार ग्राहकी सुस्त पड़ने लगी है फिर भी उम्मीद है कि दिसम्बर में काम चलेगा। ग्राहक नए रंग, डिजाइन और क्वालिटी की मांग करता है। नएपन की मांग है। सूटिंग में सेल्फ चैक चल रहे हैं और शर्टिंग में प्लेन एवं सेल्फ की मांग है। टेरीवूल, प्योर वूल कम बिक रहा है। इनकी जगह एथेनिक एवं टीआर चल रहा है।

Retailers Association Of India (Rai) Signs Mou With Vignanajyothi Institute Of Management (Vjim), Hyderabad To Launch Bridge Course In Functional Retail Management

Hyderabad: Retailers Association Of India (rai), The Unified Voice Of Indian Retailers, Has Entered Into A Strategic Memorandum Of Understanding (mou) With Vignanajyothi Institute Of Management (vjim), Hyderabad, To Jointly Design And Deliver A Bridge Course In Functional Retail Management, Alongside Extending Academic Membership Benefits For Students And Faculty.

This Mou Marks A Significant Step In Strengthening Industry-academia Collaboration, Aiming To Build Next-generation Retail Professionals Equipped With Both Managerial Competencies And Practical Operational Insight. The Program Is Designed To Bridge The Knowledge Gap Between Management Education And The Evolving Needs Of The Retail Sector.

Under The Agreement, Rai Will Spearhead The Delivery Of The Bridge Course Through **30 Hours Of Classroom Training**, Along With Industry Outreach Activities Such As

Live Projects, Guided Store Visits, And Mentorship By Senior Industry Experts. The Curriculum Covers Key Functional Areas Including **Customer Experience Management, Store Operations, Merchandising**, Shopper Behavior, Retail It And Crm, And Retail Marketing, Blending Theoretical Foundations With Hands-on Exposure.

Speaking At The Signing Ceremony, Kumar Rajagopalan, Ceo, Rai, Said:

"with The Indian Retail Sector Evolving Rapidly, There Is A Growing Demand For Professionals Who Have Both Management Acumen And A Practical Understanding Of Retail Dynamics. This Partnership With Vjim Enables Us To Prepare Students Not Just For Jobs, But For Meaningful Careers In Modern Retail."

As Part Of The Academic Membership, Rai Will Provide Vjim Students Access To Internships, Short-term Industry Projects, And Placement Assistance Through Rai's Member Network. The Institute Will Also Receive Complimentary Invites To Rai's Regional And National Events, Access To Storai Magazine, Industry Insights, And Legislative Updates. Additionally, Five Students Will Gain The Opportunity To Volunteer And Support Operations At Rai's Retail Summits And Conventions.

Vjim, With Over **30 Years Of Academic Excellence, Strong Industry Interface, Global Immersion Programs, Modern Curriculum, And 500+ Corporate Tie-ups**, Brings A Robust Academic Foundation, Experiential Pedagogy, And Leadership In Management Education To This Collaboration.

Commenting On The Partnership, Prof. (dr.) Bharat Bhushan Singh, Director, Vjim, Said:

"retail Is No Longer Just A Sector—it's A Career Landscape With Enormous Potential For Innovation, Entrepreneurship, And Leadership. This Mou Enables Our Students To Better Understand The Industry's Realities, Build Employability, And Solve Real-world Retail Challenges."

This Collaboration Aligns With Vjim's Mission Of Preparing Students For Careers In Business Management And Entrepreneurship Through Innovative Learning, Industry Mentorship, And Experiential Programs.

The Bridge Course Will Commence With A Batch Of 48 Students, Hosted At Vjim's Campus In Bachupally, Hyderabad. Vjim Will Facilitate Programme Logistics, Student Enrollment, And Provide Campus Infrastructure And Lodging For Trainers.

Vipul Organics Announces Strong Export Momentum In Organic Intermediates For Specialty Automotive Applications

New Delhi: Vipul Organics Limited, the BSE listed (VIPULORG / 530627) leading Specialty Chemicals company in the pigments and dyes segment, today announced significant progress in its portfolio of Organic Intermediates designed for speciality applications in the automobile industry, an area of strategic focus for the Company.

Following the successful execution of its first order valued at approximately Rs 10 million, Vipul Organics has continued to fulfil subsequent orders without disruption. Cumulative exports of this high value speciality intermediate have now crossed Rs 40 million till date, marking a strong and steady scale-up in global demand. This positive trajectory is expected to continue, with exports anticipated to sustain throughout the remainder of the current financial year.

Commenting on the development, Mr. Vipul P. Shah, Managing Director, Vipul Organics Limited, said, "This performance exemplifies our strategic thrust into high-growth speciality intermediates for different categories and is a validation of our continued thrust on R&D and innovation. Continuity of the orders from the global automobile sector. reflect customer confidence in our technology and capabilities. We remain committed to accelerating our presence in specialized, value-added chemistries that contribute meaningfully to our growth story."

नकद प्रवाह की कमी से व्यापारी सतर्क उद्योग दिसंबर से सुधार की उम्मीद में

इंदौर/कमल बांझल

शहर के होलसेल और रिटेल वस्त्र बाजार इन दिनों सामान्य लेकिन नियंत्रित गति से आगे बढ़ रहे है। बाहरी दिशावरों की मंडियों से माल की नियमित आवक जारी है, लेकिन खरीदी की रफ्तार पहले जैसी नहीं है। व्यापारियों के अनुसार ग्राहकी पूरी तरह बंद नहीं है, परंतु फ्लो में स्पष्ट मंदी दिखाई दे रही है।

होलसेल व्यापारी अब सीजनल डिमांड के अनुसार ही स्टॉक रख रहे हैं। पहले जहां व्यापारी कई महीने का अग्रिम स्टॉक बनाए रखते थे, वहीं अब वे सीमित और सुरक्षित स्टॉक पॉलिसी अपना रहे हैं। बाजार में नकद लेन-देन की कमी प्रमुख कारण बताया जा रहा है। व्यापारियों का कहना है कि 'रुपयों की आवक-जावक अब पहले जैसी तेज़ नहीं है,' जिससे स्टॉकिंग और भुगतान की चक्र गति प्रभावित हुई है।

डिजिटल भुगतान, फोन पे, कार्ड और ऑनलाइन खरीदी के बढ़ते चलन ने भी कैश फ्लो को काफी हद तक कम किया है। इससे छोटे और मध्यम वर्ग के व्यापारियों पर दबाव बढ़ा है। कई व्यापारी मानते हैं कि नकद कमी और डिजिटल लेनदेन ने बाज़ार की पुरानी गतिशीलता को धीमा कर दिया है। इससे बाजारों में यह धारणा बनी कि पैसा नहीं आ रहा, लेकिन इसका स्पष्ट समाधान न तो सरकार के पास है और न ही बाज़ार तंत्र के पास।

उत्पादन क्षेत्र में भी स्थिति समान है। वर्तमान में मिलें केवल उसी प्रकार का कपड़ा बना रही हैं जिसकी वास्तविक मांग है। शर्टिंग सेक्टर में भी उत्पादन पूर्व वर्षों की तुलना में कम है। सामान्यत: 15 अगस्त के बाद से शर्टिंग के भारी प्रोग्राम मिलने लगते थे, जो दिसंबर तक चलते थे, लेकिन इस वर्ष अभी तक उतना उत्पादन नहीं हुआ।

व्यापारी वर्ग को उम्मीद है कि दिसंबर माह से बाज़ार की गति में सुधार होगा और त्योहारी व वैवाहिक मौसम की देरी से आई मांग धीरे-धीरे गति पकड़ सकती है। हालांकि वर्तमान स्थितियों में व्यापारी सतर्क हैं और पूरी तरह मांग-आधारित व्यापार पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। यह परिस्थिति साफ संकेत देती है कि इस समय इंदौर वस्त्र मंडी संतुलित लेकिन दबाव वाली स्थिति में है, जहां व्यापार होता तो है, लेकिन पहले जैसी तेजी अब भी लौटनी बाकी है।

बड़ी खबर-

ESIC की नई प्रमोशन स्कीम : नियोक्ताओं और कर्मचारियों के लिए बड़ी राहत

ESIC में पंजीकरण की छूट की अन्तिम तिथि 31 दिसम्बर 2025

भीलवाड़ा/ भारत सरकार के श्रम मंत्रालय द्वारा 1 जुलाई 2025 से लागू की गई **"Scheme for Promotion of Registration of Employers and Employees"** देशभर के उद्योगों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों और सेवा संस्थानों के लिए एक बड़ा अवसर लेकर आई है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम **(ESIC)** अधिनियम 1948 के अंतर्गत जिन संस्थानों ने अभी तक पंजीकरण नहीं कराया है, उनके लिए यह स्कीम न केवल सरलता प्रदान करती है, बल्कि पुराने रिकश्वर्ड की जांच से भी राहत देती है।

पुराने रिकॉर्ड की जांच से पूरी छूट-

स्कीम के अनुसार, **1 जुलाई 2025 से 31 दिसंबर 2025** तक पंजीकरण कराने वाले नियोक्ताओं के किसी भी प्रकार के पुराने रिकॉर्ड या बकाया दस्तावेज़ों की जांच नहीं होगी। चाहे संस्था कितने भी वर्ष पुरानी क्यों न हो, यदि वह **31 दिसम्बर** तक पंजीकरण कराती है, तो उसे पूरी छूट मिलेगी। यह निर्णय खासतौर पर उन प्रतिष्ठानों के लिए राहत लेकर आया है जो वर्षों से संचालन में हैं लेकिन किसी कारणवश ईएसआईसी के दायरे में नहीं आए थे।

किन संस्थानों को मिलेगा लाभ ?

स्कीम के तहत निम्न प्रकार के संस्थान लाभ ले सकते हैं-

फ़ैक्ट्रियाँ, स्कूल-कॉलेज, केटरिंग, हॉस्पिटल, रेस्टोरेंट, ट्रांसपोर्ट व लॉजिस्टिक व्यवसाय, नगर निगम के अस्थायी और आकस्मिक कर्मचारी, निजी संस्थान, ठेकेदार, कमर्शियल प्रतिष्ठान इत्यादि।

सामान्यत: 10 या उससे अधिक कर्मचारियों वाले सभी संस्थान ईएसआईसी के अंतर्गत आते हैं और पंजीकरण अनिवार्य है।

नियोक्ताओं और कर्मचारियों को क्या लाभ ?

यह स्कीम दोहरा लाभ प्रदान करती है-

1. नियोक्ताओं के लिए लाभ

* पुरानी गड़बड़ियों या रेकॉर्ड की जांच का डर खत्म
* कानूनी जोखिम व मुआवज़े के दायित्व से राहत
* कर्मचारियों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान कर नियामकीय अनुपालन आसान

2. कर्मचारियों के लिए लाभ- कर्मचारी ईएसआईसी की सभी सुविधाएँ प्राप्त कर सकेंगे, जैसे नकद चिकित्सा लाभ, अस्पताल व इलाज कवरेज, मातृत्व लाभ, दिव्यांगता व दुर्घटना के लाभ, पारिवारिक पेंशन जैसी सुरक्षा सुविधाएँ,

सरकार का उद्देश्य- अधिकतम सामाजिक सुरक्षा स्कीम का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि देश के सभी कार्यरत कर्मचारी सामाजिक सुरक्षा की छतरी के तहत आएं। ईएसआईसी पंजीकरण न होने के कारण कई कर्मचारी दुर्घटना व बीमारी के समय वित्तीय रूप से कमजोर हो जाते हैं। नई स्कीम इस अंतर को खत्म करने की दिशा में बड़ा कदम है।

निष्कर्ष- ईएसआईसी की यह प्रमोशन स्कीम नियोक्ताओं और कर्मचारियों दोनों के लिए अत्यंत लाभकारी है। पंजीकरण प्रक्रिया को सरल करने, पुराने रिकॉर्ड से छूट देने और सामाजिक सुरक्षा तंत्र को मजबूत बनाने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण पहल साबित होगी। जो संस्थान अभी तक अधिनियम 1948 के तहत पंजीत नहीं हुए हैं, उन्हें 31 दिसंबर 2025 से पहले इस अवसर का लाभ अवश्य उठाना चाहिए।

S.K. SHARMA
94141-15120

SINCE 1990

SHARMA GROUP

S.K. SHARMA & CO.

SHARMA ASSOCIATES • SHARMA SERVICES

ANKIT SHARMA
96802-73960

EPF Act., ESIC Act. & Labour Law Experienced Consultant

Regd.Off.: 33, Badal Textile Market, Near Yes Bank, Pur Road, Bhilwara

AJMER Off.: 926/41 Geetanand Ashram Gali, Angira Nagar, Near 9 No. Petrol Pump, Ajmer, (Raj.)

CHITTOTGARH Off.: Meera Hall, Meera Market, 1st Floor, The New Insurance Co. Ltd., Chittotgarh, (Raj.)

Your Satisfaction is Our First Ambition

महाराष्ट्र में व्यापारियों की समस्याओं पर ध्यान आकर्षित करने के लिए 5 दिसंबर को लाक्षणिक बंद का आह्वान

कोल्हापुर/ राज्य सरकार का ध्यान व्यापारियों की समस्याओं की ओर आकर्षित करने के उद्देश्य से 5 दिसंबर को महाराष्ट्र भर में व्यापारियों का लाक्षणिक बंद रखा जाएगा। यह निर्णय पुणे में आयोजित व्यापारी संगठनों की संयुक्त बैठक में सर्वसम्मति से लिया गया।

बैठक का आयोजन महाराष्ट्र चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (मुंबई), फेडरेशन ऑफ एसोसिएशन ऑफ महाराष्ट्र, चेंबर ऑफ एसोसिएशन्स ऑफ महाराष्ट्र इंडस्ट्री एंड ट्रेड, दि ग्रेन, राइस एंड ऑयल सीड्स मर्चेंट्स एसोसिएशन तथा दि पूना मर्चेंट्स चेंबर के संयुक्त तत्वावधान में किया गया था। परिषद में कृषि उपज समितियों से जुड़े व्यापारियों की प्रमुख समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की गई।

इस राज्यव्यापी परिषद में मुंबई, नवी मुंबई, कोल्हापुर, सांगली, सातारा, नासिक, जलगांव, अहमदनगर, लातूर, सोलापुर व अन्य शहरों से आए व्यापारी संगठनों के 120 से अधिक पदाधिकारी और चेंबर सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित थे। बैठक की अध्यक्षता फेडरेशन ऑफ एसोसिएशन ऑफ महाराष्ट्र (मुंबई) के अध्यक्ष जितेंद्र शाह ने की।

परिषद के दौरान उपाध्यक्ष दिलीप गुप्ता, मोहन गुरनानी, भीमजीभाई भानुशाली, राजेंद्र बाठिया, रायकुमार नहार, संजय शेटे, संजीव परीख, सूर्यकांत पाठक और अन्य पदाधिकारियों ने कृषि उपज समितियों की समस्याओं, नीतिगत अड़चनों और व्यापार को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में स्वागत रायकुमार नहार ने किया, सूत्र संचालन उत्तम बाठिया ने तथा प्रास्ताविक राजेंद्र बाठिया ने प्रस्तुत किया। अंत में ईश्वर नहार ने उपस्थित प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त किया।

व्यापारी संगठनों का कहना है कि लाक्षणिक बंद के माध्यम से वे सरकार तक अपनी समस्याओं को प्रभावी रूप से पहुंचाना चाहते हैं।

One Stop Solution From Yarn to Apparel
MST GROUP
M.S.TRADERS
TRUST MEETS PERFORMANCE
Textile Consultant & Service Providers

वस्त्र क्षेत्र के लिए 305 करोड़ रूपये की 'टेक्स-रिप्स' योजना को केंद्र सरकार की मंजूरी

नई दिल्ली/मिरर ब्यूरो

केंद्र सरकार ने वस्त्र क्षेत्र में टेक्नोलॉजी, डिजाइन, नवाचार और कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए 305 करोड़ रुपये की नई 'टेक्स-रिप्स' योजना को मंजूरी दी है। यह योजना भारतीय वस्त्र उद्योग को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में और मजबूत करने तथा एमएसएमई इकाइयों को नई तकनीकों से जोड़ने के उद्देश्य से तैयार की गई है।

केंद्रीय कपड़ा मंत्री गिरिराज सिंह ने बताया कि यह योजना शोध-विकास, डिजाइन नवाचार, स्मार्ट टेक्सटाइल, स्थिरता-आधारित उत्पादन और गुणवत्ता सुधार की दिशा में बड़ा कदम साबित होगी। उनके अनुसार, यह योजना उद्योग को आधुनिक तकनीक अपनाने, उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ाने और निर्यात क्षमता को मजबूत करने में मदद करेगी।

योजना के मुख्य उद्देश्य और लाभ- सरकार ने बताया कि टेक्स-रिप्स का लक्ष्य वस्त्र उद्योग को हाई-टेक समाधान देना है। इसके तहत

- स्वदेशी अनुसंधान, डिजाइन और नई सामग्रियों के विकास को बढ़ावा
- तकनीकी वस्त्र में शोध, प्रयोग और परीक्षण सुविधाओं का निर्माण
- उद्योग को स्मार्ट टेक्सटाइल, सतत उत्पादन तकनीक और नई फाइबर तकनीकों से जोड़ना
- वैश्विक प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के लिए गुणवत्ता मानकों और उत्पादन क्षमता में सुधार

इस योजना के तहत उद्योग को परीक्षण, डिजाइन, गुणवत्ता प्रमाणीकरण, तकनीकी सहायता और प्रशिक्षण जैसी सेवाएँ उपलब्ध कराई जाएँगी। साथ ही, आर एण्ड डी संस्थानों, उद्योग संगठनों और टेक्सटाइल क्लस्टरों को इस योजना से प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा।

प्रक्रिया संरक्षण और स्थिर उत्पादन पर जोर- स्मार्ट टेक्सटाइल, डिजिटल फिनिशिंग, रीसाइक्लिंग, ऊर्जा-कुशल उत्पादन तकनीकों और पर्यावरण- अनुकूल प्रक्रियाओं के विकास पर भी विशेष ध्यान दिया जाएगा।

एमएसएमई इकाइयों के लिए बड़ा अवसर- योजना का उद्देश्य छोटे और मध्यम वस्त्र उद्योगों को नई तकनीक अपनाने में सहायता देना है। इससे

- उत्पादन लागत में कमी
- उत्पादों की गुणवत्ता में बढ़ोतरी
- निर्यात के अवसर बढ़ेंगे

भारत का टेक्सटाइल उद्योग वैश्विक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। ऐसे समय में, 'टेक्स-रिप्स' योजना उद्योग को नई गति और नई दिशा देने वाली महत्वाकांक्षी पहल है। यह योजना न केवल तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देगी, बल्कि रोजगार, नवाचार और निर्यात को भी नई ऊँचाइयों तक ले जाने की क्षमता रखती है।

चालू सीजन में रुई उत्पादन 305 लाख गांठ होने की संभवना

मुम्बई/मिरर ब्यूरो

स्पिनिंग मिलों की रूई में लेवाली कमजोर है। नई कपास में नमी अधिक है। नमी अधिक होने से स्पिनिंग मिलों को यार्न की प्राप्ति कम होती है। मिलों की नई रूई की खरीदी में रूचि कम है। किसानों को अपनी उपज औने-पौने भाव में नहीं बेचना पड़े इसलिए सरकारी एजेंसी को अधिक से अधिक माल खरीदना पड़ सकता है। कई राज्यों में बारिश होने के कारण कपास की गुणवत्ता और फसल दोनों को नुकसान होने का अनुमान है। गुजरात की जिनिंग इकाइयों में काम शुरू हो गया है। 70 प्रतिशत माल बारिश के कारण हल्का है। अच्छी गुणवत्ता की कपास आने में एकाध महीने लग सकता है। गुजरात में 72 लाख गांठ रूई उत्पादन का अनुमान लगाया गया है।

कॉटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने वर्ष 2025-26 सीजन के लिए देश का उत्पादन अनुमान पर अपनी पहली पेशगी की है। सीसीआई के अनुसार 30 सितम्बर 2025 को पूरी सीजन में क्लोजिंग स्टॉक 60.59 लाख गांठ था, तो 30 सितम्बर 2026 को समाप्त होने वाली सीजन में क्लोजिंग स्टॉक 33 लाख गांठ बढ़कर 93.59 लाख गांठ रहने की धारणा व्यक्त की गई है। एसोसिएशन के अध्यक्ष का कहना है कि 11 राज्यों के संगठनों और अन्य व्यापार सूत्रों के आंकड़ों के आधार पर एसोसिएशन ने इस सीजन के लिए देश में रूई का उत्पादन 170 किलो की एक गांठ ऐसी कुल 305 लाख गांठ होने का अनुमान लगाया गया है। अक्टूबर महीने में कुल सप्लाई 93.17 लाख गांठ रही है।

देश में रूई की खपत पिछले वर्ष के 314 लाख गांठ के मुकाबले मौजूदा सीजन में कुछ घटकर 300 लाख गांठ हो सकती है। प्रेसिंग अनुमान पिछले वर्ष के 312 लाख गांठ की तुलना में 305 लाख गांठ होगी। देश में रूई का आयात पिछले वर्ष के 41 लाख गांठ के मुकाबले इस सीजन में बढ़कर 45 लाख गांठ और देश से रूई का निर्यात पूर्व सीजन के 18 लाख गांठ से घटकर 17 लाख गांठ रहने का अनुमान है।

पिछले महीने के अंत में रूई का स्टॉक 69.96 लाख गांठ रहने का अनुमान है, जिसमें 39 लाख गांठ रूई टेक्सटाइल मिलों के पास है, वहीं सीसीआई, महाराष्ट्र फेडरेशन और अन्यों द्वारा खरीदा किंतु उपयोग नहीं किया गया स्टॉक को मिलाकर 27.67 लाख गांठ हो सकता है।

Simone Federico & Figli began its journey in 1876 from the picturesque town of Biella, nestled in the heart of Italy.

NOW IN INDIA AVAILABLE IN A STORE NEAR YOU

SIMONE FEDERICO & FIGLI
5th Floor, Gopal Bhawan, 199 Princess Street, Mumbai - 400 002 (MH) India; Tel.: +91 22 6633 6571 - 75
Customer Care: +91 22 6633 6576 | info@simonefederico.com | www.simonefederico.com

OUR ASSOCIATES:
FABCOTT INDIA CLOTHING LLP, DELHI: DELHI / PUNJAB / HARYANA / UTTAR PRADESH 9999831777 | MANISH TRADING CO., AHMEDABAD: GUJARAT / MADHYA PRADESH 9429004140 | R.P. ENTERPRISES, MUMBAI: MAHARASHTRA 9819081444 | VINAYAKA TRADING CO., JAIPUR: RAJASTHAN 9602340000 | SHA HIRACHAND JAWANMAL & CO., BANGALORE: KARNATAKA 9886290009 | SHIVAM FABRICS PVT. LTD., HYDERABAD: TELANGANA / ANDHRA PRADESH 9885444440 | COTTON HOUSE, CHENNAI: TAMILNADU 9884247460 | HEMA INC, BANGALORE: KERALA 9448575111

टेक्निकल टेक्सटाइल को अपनाकर उद्योगों का विस्तार करें उद्यमी - श्री मल्होत्रा

पीएचडीसीसीआई ने पानीपत के वस्त्र उद्योग का तकनीकी रूपांतरण: उच्च मूल्य, बेहतर कल विषय पर किया चिंतन शिविर

पानीपत/ महावीर गोयल

भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय के अंतर्गत चल रहे नेशनल टेक्निकल टेक्सटाइल मिशन के निदेशक अशोक मल्होत्रा ने कहा है कि कपड़े तथा इससे जुड़े उद्योगों को आधुनिक तकनीक पर आधारित टेक्निकल टेक्सटाइल को अपनाकर अपने उद्योगों को अपग्रेड करना चाहिए क्योंकि आने वाला भविष्य में भारत ही नहीं विदेशों में भी टेक्निकल टेक्साटाइल की मांग बढ़ेगी।

मल्होत्रा आज पानीपत में पीएचडी चौंबर ऑफ कामर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा आयोजित चिंतन शिविर में भाग लेकर पानीपत के उद्यमियों, अकेडमिक तथा तकनीकी संस्थाओं के शोधार्थियों को संबोधित कर रहे थे।

शिविर का विषय- पानीपत के वस्त्र उद्योग का तकनीकी रूपांतरणरूउच्च मूल्य, बेहतर कल था। कार्यक्रम में 300 से अधिक उद्यमियों व अन्य प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

श्री मल्होत्रा ने कहा कि एनटीटीएम के वर्कर, सुपरवाइजर तथा इंजीनियर को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस क्षेत्र में लगातार शोध हो रही है। जिसके लिए शिक्षण संस्थानों में 15 करोड़ रुपये की लागत तक लैब शुरू की जा रही हैं तथा शिक्षण संस्थानों में टेक्निकल टेक्सटाइल के पाठयक्रम शुरू करवाए जा रहे हैं। इसके अलावा स्टार्टअप को 50 लाख रुपये तक का अनुदान देकर बढ़ावा दिया जा रहा है।

शिक्षण संस्थानों में बनाई जा रही टेक्निकल टेक्सटाइल शोध लैब

ग्लोबल एलांइस फोर टेक्सटाइल सस्टेनेबिल्टी काउंसिल के चेयरमैन पविंद्र सिंह ने कहा कि अगर हमें कपड़ा उद्योग के कारोबार को बढ़ाना है तो उसके लिए टेक्साटाइल को अपनाना होगा। उन्होंने पीएचडीसीसीआई द्वारा किए गए आयोजन के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि छोटे उद्योगों को योजनाएं और कानून की जानकारी जरूरी है।

इस अवसर पर बोलते हुए वस्त्र मंत्रालय की शोध संस्थान नार्दन इंडिया टेक्सटाइल रिसर्च एसोसिएशन के महानिदेशक डा.एमएस परमार ने कहा कि इस क्षेत्र में लगातार शोध हो रही है। आक या मदार से निकलने वाले फाइबर भारतीय सैनिकों के लिए ऐसी जैकेट तैयार की जा रही है, जो माइनस तापमान में भी कारगर होगी। हरियाणा के सिरसा में एक पायलट प्रोजैक्ट शुरू किया गया है।

कार्यक्रम के दौरान आईआईटी दिल्ली के प्रो.बिपिन कुमार के संयोजन में अटल सेंटर ऑफ टेक्सटाइल रीसाइकलिंग एंड सस्टेनेबिल्टी को लांच किया गया। इस अवसर पर सेवानिवृत्त मेजर जनरल अशीम कोहली द्वारा नेशनल फ्लैग रीसाइकलिंग अथवा रीसाइकल होने वाले राष्ट्रीय ध्वज को लांच किया गया। कार्यक्रम के दौरान अटल इंक्यूबेशन सेंटर आईआईटी दिल्ली के सहयोग से टेक्सटाइल टेक इनोवेटर भी लांच किया गया।

पीएचडीसीसीआई टेक्सटाइल कमेटी के को-चेयर एवं पोलीस्टर टेक्सटाइल इंडस्ट्री एसोसिएशन के सेक्टरी जनरल आरके विज ने कहा कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य टेक्नीकल टेक्सटाइल के क्षेत्र में हो रही शोध सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में उद्योगपतियों को बताना है। भविष्य में इसका विस्तार किया जाएगा।

बाक्स बनाना है इस पेरे से

बुलेट प्रूफ जैकेट व तिरंगा होगा रीसाइकिल

पीएचडी चैंबर असॅफ कामर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा आयोजित किए गए

समर बुकिंग 2026 के CHINAR PLUS लिए करेगा लखनऊ में भव्य कॉन्फ्रेंस

डायरेक्टर दिव्यांश अग्रवाल ने दी जानकारी

भिवानी/ रेडीमेड गारमेंट्स सेक्टर में तेजी से उभरते ब्राण्ड चिनार प्लस ने देशभर में अपनी मजबूत पकड़ बनाते हुए आने वाले समर सीजन के लिए एक बड़ा आयोजन करने की घोषणा की है। कम्पनी के डायरेक्टर दिव्यांश अग्रवाल ने बताया कि समर बुकिंग 2026 के नाम से यह विशेष कश्चन्फ्रेंस 20 व 21 दिसम्बर 2025 को लखनऊ के फाइव स्टार होटल "माडा" में आयोजित की जाएगी। इस कार्यक्रम में देशभर के रेडीमेड गारमेंट्स के व्यापारी शामिल होंगे और अगले सीजन की नई क्वालिटी, नए डिज़ाइन व मार्केट ट्रेंड्स का अवलोकन कर सकेंगे।

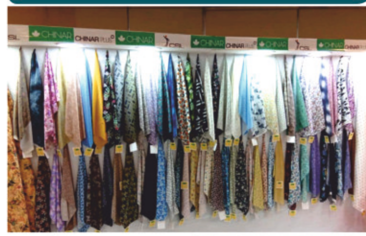

अग्रवाल ने बताया कि चिनार प्लस उत्तर भारत में पहले से ही मजबूत उपस्थिति दर्ज करा चुका है और अब कंपनी का लक्ष्य है कि यह ब्राण्ड देश के हर कोने में आसानी से उपलब्ध हो। कंपनी के शीतकालीन द्धविंटरत्रः कलेक्शन को भी व्यापारियों से शानदार प्रतिक्रिया मिल रही है, जिसके बाद समर सीजन को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में यह सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है।

दिव्यांश अग्रवाल ने कहा कि रेडीमेड गारमेंट्स सेक्टर में भले ही कई ब्राण्ड मौजूद हों, लेकिन चिनार प्लस अपनी विशिष्ट पहचान और उत ष्ट फिटिंग डिज़ाइन के कारण अलग स्थान रखता है। कंपनी अपने उत्पादों का निर्माण अनुभवी डिज़ाइनरों की देखरेख में आधुनिक वातावरण में करती है, जिससे हर उत्पाद की फिनिशिंग और स्टाइल बेहतरीन बनती है। उपयोग में लाए जाने वाले फैब्रिक्स पूरी तरह इको-फ्रेंडली, हाई-क्वालिटी एवं बाजार मानकों के अनुरूप होते हैं।

कम्पनी के चेयरमैन नरेश मीनू अग्रवाल ने बताया कि उनके उत्पादों को देशभर के व्यापारियों और उपभोक्ताओं से बेहतरीन रिस्पश्चन्स मिला है। उन्होंने कहा कि चिनार प्लस ने हमेशा अपने प्रोडक्ट्स की गुणवत्ता को प्राथमिकता दी है ताकि ग्राहक विश्वास बना रहे और ब्राण्ड की विश्वसनीयता कायम रहे। यही कारण है कि कंपनी ने अपने उत्पादों के दाम भी उपभोक्ता-हितैषी रखे हैं, जिससे सामान्य ग्राहक भी आसानी से इन्हें खरीद सके।

अग्रवाल ने आगे बताया कि लखनऊ कश्चन्फ्रेंस में प्लेन शर्ट, कैंजुअल शर्ट, क्लबवियर शर्ट, हाफ स्लीव्स शर्ट, फश्चर्मल पैंट, कश्चटन पैंट, सगर जैकेट, सगर ब्लेज़र आदि की नई श्रेणियों को प्रदर्शित किया जाएगा। इससे व्यापारियों को आने वाले समर सीजन के फैशन ट्रेंड, ग्राहकों की पसंद और नए डिज़ाइन की स्पष्ट दिशा मिलेगी। कंपनी का उद्देश्य है कि बाजार की मांग के अनुसार समय रहते आकर्षक और गुणवत्तापूर्ण उत्पाद तैयार किए जा सकें।

इस कॉन्फ्रेंस के जरिए चिनार प्लस आने वाले वर्षों के लिए अपने बिजनेस नेटवर्क और ट्रेड रिलेशंस को और मजबूत बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाने जा रहा है।

भारत अफगानिस्तान ने टेक्सटाइल क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर की अहम वार्ता

नई दिल्ली/मिरर ब्यूरो

भारत और अफगानिस्तान के बीच टेक्सटाइल सेक्टर में सहयोग को मजबूत करने के उद्देश्य से दोनों देशों के प्रतिनिधिमंडलों के बीच महत्वपूर्ण बैठक संपन्न हुई। इस वार्ता में कपड़ा उद्योग से जुड़े कई प्रमुख क्षेत्रों कपास खेती, तकनीकी सहयोग, कपड़ा मूल्य-श्रृंखला और द्विपक्षीय व्यापार नेटवर्कपर विस्तार से चर्चा की गई।

बैठक का उद्देश्य टेक्सटाइल सेक्टर में आपसी क्षमता को बढ़ाना, नई तकनीकों का आदान प्रदान करना और दोनों देशों के उद्योगों के लिए नए अवसर तैयार करना था।

कपास और अन्य कच्चे माल पर सहयोग- अफगानिस्तान कपास उत्पादन वाला उभरता हुआ देश है, जबकि भारत विश्व के प्रमुख कपास उत्पादकों में से एक है। बैठक में तय किया गया कि दोनों देश

* कपास उत्पादन तकनीकों का आदान प्रदान करेंगे

* हाई यील्ड सीड और आधुनिक खेती पद्धतियों को साझा करेंगे, और कच्चे माल की आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने के लिए दीर्घकालिक साझेदारी की दिशा में काम करेंगे।

* इस कदम से अफगानिस्तान के किसानों को बेहतर प्रशिक्षण और तकनीकी सहयोग मिलेगा, जबकि भारतीय उद्योगों को स्थिर कच्चा माल मिल सकेगा।

टेक्निकल और वैल्यू-एडेड टेक्सटाइल में साझेदारी- दोनों देशों ने टेक्निकल टेक्सटाइल, मशीनरी, बुनाई कताई तकनीक, प्रोसेसिंग और फिनिशिंग में सहयोग बढ़ाने पर सहमति जताई।

* भारतीय संस्थान अफगान तकनीशियनों और छात्रों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करेंगे।

* टेक्सटाइल इंजीनियरिंग और रिसर्च में संयुक्त परियोजनाएँ शुरू करने पर भी चर्चा हुई।

* यह सहयोग अफगानिस्तान में कौशल विकास और रोजगार अवसरों को बढ़ाएगा।

द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा- बैठक में दोनों देशों के व्यापार संगठनों और कंपनियों को जोड़ने के लिए एक मजबूत टेक्सटाइल ट्रेडिंग नेटवर्क विकसित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया गया।

* भारत अफगानिस्तान से कच्चा कपास और कुछ विशेष हस्तशिल्प उत्पाद आयात कर सकता है।

* वहीं अफगानिस्तान भारतीय मिलों से यार्न, फैब्रिक, टेक्निकल टेक्सटाइल और रेडीमेड गारमेंट्स का आयात बढ़ाने में रुचि रखता है।

* भविष्य में संयुक्त उद्यम स्थापित करने और निवेश बढ़ाने की संभावनाओं पर भी चर्चा हुई।

* रोजगार और आर्थिक विकास पर बनेगी सकारात्मक प्रभाव

विशेषज्ञों का मानना है कि इस सहयोग से

* भारत को अपने टेक्सटाइल निर्यात के लिए नया बाज़ार मिलेगा,

* अफगानिस्तान को कपड़ा उद्योग स्थापित करने में तकनीकी सहायता और निवेश मिलेगा, और दोनों देशों में रोजगार सृजन बढ़ेगा।

* दोनों देशों के प्रतिनिधिमंडलों ने आगे भी नियमित बैठकें आयोजित करने और सहयोग को और गहरा करने की प्रतिबद्धता जताई।

* भारत अफगानिस्तान का यह टेक्सटाइल सहयोग क्षेत्रीय आर्थिक साझेदारी को मजबूत करेगा और दोनों देशों के कपड़ा उद्योगों के लिए नई संभावनाएँ खोलेगा।

नवी मुंबई में शुरू हुआ देश का पहला टेक्सटाइल रीसाइक्लिंग सेंटर

अपशिष्ट प्रबंधन और रोजगार सृजन की दिशा में बड़ा कदम

नवी मुंबई/मिरर ब्यूरो

देश में बढ़ते कपड़ा अपशिष्ट और पर्यावरणीय प्रदूषण को नियंत्रित करने की दिशा में नवी मुंबई में भारत का पहला टेक्सटाइल रीसाइक्लिंग फैसिलिटी स्थापित किया गया है। यह पहल न केवल पर्यावरण संरक्षण का महत्वपूर्ण कदम है बल्कि टेक्सटाइल सेक्टर में सतत विकास को बढ़ावा देने वाली एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है।

नए टीआरएफ का उद्देश्य कपड़ा उद्योग में सालाना उत्पन्न होने वाले बड़े पैमाने के फैब्रिक वेस्ट, कटिंग स्क्रैप, पुराने परिधानों और औद्योगिक टेक्सटाइल अपशिष्ट को पर्यावरण-अनुकूल तरीके से पुनर्चक्रित करना है। अब तक ये विशाल मात्रा में अपशिष्ट लैंडफिल में जाता था, जिससे पर्यावरण पर दबाव बढ़ता था। यह नई सुविधा इन अपशिष्टों को पुनः उपयोग योग्य फाइबर, यार्न, तथा अन्य उपयोगी वस्तुओं में बदलने के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग करेगी।

महिलाओं को मिलेगा बड़े पैमाने पर रोजगार - इस केंद्र की एक विशेषता यह है कि यह महिलाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा करेगा। रीसाइक्लिंग यूनिट में छंटाई, वर्गीकरण, प्री-प्रोसेसिंग, ऑपरेशन और पैकेजिंग जैसे कार्यों में स्थानीय महिला कार्यबल को प्राथमिकता दी जाएगी। यह कदम महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के साथ-साथ सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में भी प्रभावी भूमिका निभाएगा।

सस्टेनेबिलिटी की ओर निर्णायक कदम - टेक्सटाइल रीसाइक्लिंग फैसिलिटी की स्थापना भारत में सर्कुलर इकोनॉमी को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण साबित होगी। कपड़ा उद्योग वैश्विक स्तर पर प्रदूषण बढ़ाने वाले प्रमुख सेक्टरों में से एक है। ऐसे में यह सुविधा न केवल पर्यावरणीय प्रभाव को कम करेगी, बल्कि उद्योगों को जिम्मेदार उत्पादन की ओर प्रेरित करेगी।

उद्योग विशेषज्ञों का मानना है कि नवी मुंबई का यह मॉडल आने वाले समय में देश के अन्य टेक्सटाइल हब सूरत, तिरुपुर, भीलवाड़ा और लुधियाना के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण बनेगा। यह पहल भविष्य में भारत को ग्रीन टेक्सटाइल मैन्युफैक्चरिंग के वैश्विक मानचित्र पर मजबूत स्थिति दिलाने में भी सहायता करेगी।

बिहार में रबर, टेक्सटाइल और बैग निर्माण की 16 नई फैक्ट्रियाँ, 777 लोगों को सीधे रोजगार

उद्योग विभाग ने पहले चरण में भूमि आवंटन की प्रक्रिया पूरी की

पटना/बिहार सरकार ने राज्य में औद्योगिकीकरण को गति देने की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए रबर, फूड प्रोसेसिंग, टेक्सटाइल और बैग निर्माण क्षेत्र की 16 नई फैक्ट्रियों के लिए भूमि आवंटित कर दी है। उद्योग विभाग द्वारा जारी जानकारी के अनुसार, इन फैक्ट्रियों के शुरू होने के बाद 777 लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा, जबकि 10 हजार से अधिक युवाओं को अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। इन इकाइयों को स्थापित करने के लिए लगभग 474 करोड़ रुपये का निवेश प्रस्तावित है।

ये फैक्ट्रियाँ पटना, सुपौल, मधुबनी, औरंगाबाद, जहानाबाद, बक्सर, जमुई और भोजपुर जिलों में लगाई जाएँगी। कुल 10,000 एकड़ से अधिक औद्योगिक भूमि पर उद्योग विभाग तेजी से संरचनाओं का विकास कर रहा है। विभाग के अनुसार निवेशकों को एनओसी देने की प्रक्रिया भी पहले चरण में ही पूरी कर ली गई है, जिससे निर्माण कार्य में तेजी आएगी।

उद्योग विभाग ने बताया कि भूमि आवंटन के बाद उद्योगपतियों को शेष स्वीकृतियाँ समयबद्ध तरीके से मिलेंगी। पर्यावरणीय मंजूरी, बिजली कनेक्शन, जल आपूर्ति, सीवरेज, सड़क संपर्क आदि सुविधाओं को भी प्राथमिकता दी जाएगी। विभाग का प्रयास है कि 2026 तक राज्य के अधिकांश औद्योगिक क्षेत्रों में उत्पादन शुरू हो सके।

उद्योग मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल ने कहा कि बिहार पिछले दो दशकों से निरंतर औद्योगिक विकास की दिशा में अग्रसर है। राज्य सरकार निवेशकों को आकर्षित करने के लिए विशेष प्रोत्साहन दे रही है, जिससे बिहार आत्मनिर्भर औद्योगिक राज्य के रूप में उभर सके।

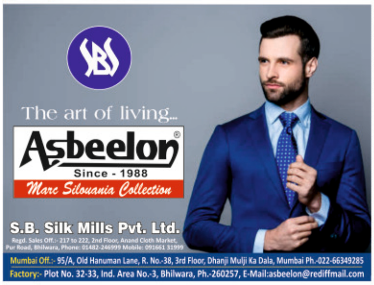

सांसद दामोदर अग्रवाल के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री से की मुलाकात, विद्युत टैरिफ व सौर ऊर्जा मुद्दों पर रखी महत्वपूर्ण मांगें

भीलवाड़ा/ राजस्थान के प्रमुख औद्योगिक केंद्र भीलवाड़ा के उद्योग जगत से जुड़ी संस्थाओं राजस्थान टेक्सटाइल मिल्स एसोसिएशन, मेवाड़ चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री तथा भीलवाड़ा टेक्सटाइल ट्रेड फेडरेशन के प्रतिनिधिमंडल ने सांसद दामोदर अग्रवाल के नेतृत्व में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से मुलाकात कर विद्युत टैरिफ दरों और सौर ऊर्जा उत्पादन से जुड़े मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की।

प्रतिनिधिमंडल में डा. एस.एन. मोदानी, दिनेश नौलखा, जे.सी. लद्‌ढा, डी.पी. मंगल, एन.के. बहेड़िया, टी.सी. छाबड़ा, मनीष चाण्डक और अंकित शर्मा शामिल थे।

बैठक में उद्योगपतियों ने मुख्यमंत्री के समक्ष विद्युत निगमों द्वारा लगाए गए 1 रुपये प्रति यूनिट रेगुलेटरी सरचार्ज को वापस लेने या राज्य सरकार की ओर से अनुदान उपलब्ध कराने की मांग रखी। प्रतिनिधिमंडल ने बताया कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा, टैरिफ युद्ध और घरेलू बाजार की चुनौतियों के कारण उद्योग पहले से ही दबाव में हैं। ऐसे में बढ़ी हुई बिजली दरें और अन्य इनपुट लागत राजस्थान के उद्योगों को अन्य राज्यों की तुलना में कम प्रतिस्पर्धी बना रही हैं, जिसका सीधा प्रभाव रोज़गार पर पड़ रहा है।

उद्यमियों ने कहा कि रेगुलेटरी सरचार्ज हटने से उद्योगों को राहत मिलेगी और कठिन समय में रोजगार सुरक्षा को मजबूती मिलेगी। इससे राजस्थान एक आकर्षक निवेश गंतव्य के रूप में भी अपनी स्थिति बनाए रख सकेगा। सौर ऊर्जा से जुड़े मुद्दों पर

प्रतिनिधिमंडल ने उद्योगों के कनेक्टेड लोड के आधार पर 400 प्रतिशत तक कैप्टिव सोलर प्लांट लगाने की अनुमति देने की मांग रखी, जबकि वर्तमान सीमा 200 प्रतिशत है।

साथ ही, उद्योगों के लिए कम्बाइंड बैंकिंग सुविधा और अधिक उत्पादन पर अनिवार्य 20 प्रतिशत बैटरी केपेसिटी लगाने के प्रावधान को समाप्त करने का अनुरोध भी किया गया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रतिनिधिमंडल की बातों को गंभीरता से सुनते हुए सिद्धांततः सहमति व्यक्त की और अपने विशिष्ट सचिव संदेश नायक को इस संबंध में विस्तृत नोट तैयार करने व आवश्यक निर्देश जारी करने के लिए कहा। सांसद दामोदर अग्रवाल ने मुख्यमंत्री द्वारा उद्यमियों की समस्याओं पर संवेदनशीलता दिखाने के लिए आभार प्रकट किया।

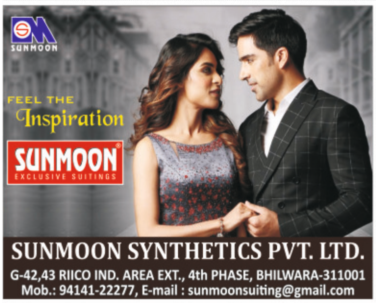

क्या भीलवाड़ा बन सकता है भारत का अगला रेडीमेड गारमेंट हब?

टेक्सटाइल सिटी से फैशन सिटी बनने की दिशा में बढ़ते कदम

भीलवाड़ा/गोविन्द शर्मा

राजस्थान का भीलवाड़ा, जिसे अब तक 'टेक्सटाइल सिटी ऑफ़ इंडिया' के नाम से जाना जाता है, देश का सबसे बड़ा सूटिंग और सिंथेटिक फैब्रिक उत्पादन केंद्र है। लेकिन अब यह शहर एक नई औद्योगिक दिशा की ओर कदम बढ़ा रहा है रेडीमेड गारमेंट निर्माण का केंद्र बनने की ओर।

वस्त्र उद्योग के विशेषज्ञों का मानना है कि अगले 5 से 7 वर्षों में भीलवाड़ा भारत का प्रमुख रेडीमेड गारमेंट हब बन सकता है, यदि नीति, निवेश और इन्फ्रास्ट्रक्चर स्तर पर सही कदम उठाए जाएँ।

भीलवाड़ा की मौजूदा ताकत- एकीकृत वस्त्र ढांचा -

- भीलवाड़ा की सबसे बड़ी ताकत उसका पूर्ण एकीकृत वस्त्र ढांचा है। यहाँ धागे से लेकर फैब्रिक, प्रोसेसिंग, डाइंग और फिनिशिंग तक की सभी सुविधाएँ पहले से मौजूद हैं।

- शहर में लगभग 850 से अधिक टेक्सटाइल यूनिट्स, दर्जनों प्रोसेस हाउस और हजारों पावरलूम मशीनें कार्यरत हैं।

- इस मजबूत आधार पर यदि कटिंग, स्टिचिंग, एम्ब्रॉयडरी और पैकेजिंग जैसी गारमेंट इकाइयाँ जोड़ी जाएँ, तो भीलवाड़ा एक पूर्ण गारमेंटिंग सेंटर बन सकता है।

क्या है ज़रूरत? 'फैब्रिक से फैशन' की ओर

भीलवाड़ा में अब तक फोकस मुख्यतः ग्रे और फिनिश्ड फैब्रिक निर्माण पर रहा है, लेकिन वैश्विक मांग अब 'फैब्रिक टू फैशन' की ओर बढ़ रही है। इसके लिए ज़रूरी है कि शहर में गारमेंट पार्क या आरएमजी क्लस्टर की स्थापना हो।

-कौशल प्रशिक्षण केंद्र शुरू हों, जो युवाओं को गारमेंटिंग, डिज़ाइनिंग और मशीन ऑपरेशन में प्रशिक्षित करें।

-एमएसएमई नीति के तहत वित्तीय सहायता और टैक्स इंसेंटिव्स दिए जाएँ।

-लॉजिस्टिक कनेक्टिविटी (रेल, हवाई अड्डा, एक्सप्रेसवे) को और मजबूत किया जाए।

राज्य सरकार की भूमिका और अवसर

राजस्थान सरकार पहले ही 'राजस्थान टेक्सटाइल एंड अपैरल पॉलिसी 2025' के तहत रेडीमेड गारमेंट सेक्टर को प्राथमिकता दे चुकी है।

- इस नीति में नए निवेशकों को भूमि, बिजली और ब्याज पर सब्सिडी देने की घोषणा की गई है।

- यदि भीलवाड़ा इस नीति का सक्रिय लाभ उठाता है, तो यहाँ 100 से अधिक नई गारमेंट यूनिट्स अगले 3 4 वर्षों में स्थापित की जा सकती हैं।

वैश्विक परिस्थिति भी अनुकूल

- वर्तमान में भारत से परिधान निर्यात का बड़ा हिस्सा बांग्लादेश, वियतनाम और चीन को चुनौती दे रहा है।

- भीलवाड़ा जैसे क्लस्टर, जहाँ उत्पादन लागत अपेक्षाकृत कम है और कच्चा माल स्थानीय रूप से उपलब्ध है, वहाँ फास्ट-फैशन ब्रांड्स को आकर्षित करने की पूरी संभावना है।

समयसीमा और संभावनाएँ

यदि स्थानीय उद्योग और फेडरेशन मिलकर योजनाबद्ध रूप से आगे बढ़ते हैं

- पहले 2 वर्षों में 100 नई गारमेंट इकाइयाँ,

- अगले 5 वर्षों में एक अपेरल पार्क,

- 7 वर्षों में 10,000 करोड़ तक का रेडीमेड उत्पादन संभव है।

-यह न केवल हजारों युवाओं को रोजगार देगा, बल्कि भीलवाड़ा को 'फैब्रिक हब से फैशन हब' में बदल सकता है।

निष्कर्ष

भीलवाड़ा के पास वह सब कुछ है जो एक रेडीमेड गारमेंट हब बनने के लिए चाहिए, कच्चा माल, कुशल श्रम, औद्योगिक परंपरा और उद्यमशीलता की भावना।

अब केवल ज़रूरत है एक स्पष्ट रोडमैप, नीति-सहयोग और उद्योग की एकजुटता की। अगर यह दिशा बनी रही, तो आने वाले दशक में भीलवाड़ा भारत का 'नेक्स्ट तिरुपुर' बन सकता है जहाँ सूटिंग-शर्टिंग के साथ 'मेड-इन-भीलवाड़ा' रेडीमेड परिधान भी वैश्विक मंच पर चमकेंगे।

रेलवे के चीफ कॉमर्शियल मैनेजर ने उद्यमियों से की विस्तृत वार्ता

माल परिवहन को अधिक सस्ता और प्रभावी बनाने पर जोर

भीलवाड़ा/ मेवाड़ चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री में आयोजित एक महत्वपूर्ण बैठक में भारतीय रेलवे के उत्तर पश्चिम मुख्यालय के चीफ कॉमर्शियल मैनेजर (फ्रेट मार्केटिंग) श्री विवेक रावत ने उद्योगपतियों से संवाद करते हुए माल परिवहन को रेलवे की ओर मोड़ने के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण योजनाओं और सुधार प्रस्तावों पर चर्चा की।

उन्होंने बताया कि सड़क मार्ग के उन्होंने बताया कि सड़क मार्ग के मुकाबले रेलवे से परिवहन न केवल लागत कम करता है, बल्कि उद्योगों की कार्बन क्रेडिट देनदारियों में भी कमी लाता है। रेलवे माल परिवहन की गति बढ़ाने के लिए देशभर में कंटेनर डीपो विकसित कर रहा है। भीलवाड़ा क्षेत्र के लिए मंडपिया, लाम्बिया आदि स्टेशनों पर लॉजिस्टिक स्टडी करवाई जा रही है ताकि औद्योगिक परिवहन को बेहतर सुविधा मिल सके।

रावत ने कहा कि रेलवे विशेष पार्सल परिवहन योजना तैयार कर रहा है, जिसके तहत माल उद्योगों के स्थान से उठाकर सीधे गंतव्य तक पहुँचाया जाएगा। इस पूरी प्रणाली के लिए एक एकीकृत एप आधारित व्यवस्था भी विकसित की जा रही है।

बैठक में रेलवे के सहायक वाणिज्य प्रबंधक राजकुमार एवं सीएमआई गोवर्धन भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का स्वागत मानद महासचिव आर. के. जैन और जेडआरयूसीसी सदस्य वी. के. मानसिंहका ने किया।

उद्यमियों ने रेलवे की नीतियों को आधुनिक व्यवसाय मॉडल के अनुरूप ढालने की आवश्यकता पर बल दिया। मयूर इंटरनेशनल के बी. एस. पंवार ने सुझाव दिया कि निर्यात हेतु छूटकर माल परिवहन के लिए भीलवाड़ा से चलने वाली ट्रेनों के एसएनआर और पार्सल कोचों का उपयोग किया जा सकता है।

आरएसडब्ल्यूएम गुलाबपुरा के वी. के. मेहता ने कहा कि यदि रेलवे की लागत और समयबद्ध डिलीवरी सड़क परिवहन से बेहतर होती है, तो उद्योग स्वाभाविक रूप से

रेलवे को प्राथमिकता देंगे।

चैम्बर के वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. आर. सी. लोढा और सहयोग सिल्क मिल्स के एन. के. जैन ने क्रमशः किराया संरचना में सुधार और वार्षिक भाड़ा अनुबंध जैसी नीतियों पर जोर दिया।

रेलवे ने आश्वस्त किया कि नीतिगत बाधाओं को दूर करने और उद्योग हितों के अनुरूप नई प्रणाली विकसित करने के लिए सुझावों पर गंभीरता से विचार किया जाएगा।

एमएसएमई ऋण आउटरीच कार्यक्रम

भीलवाड़ा/ सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया क्षेत्रीय कार्यालय जोधपुर की ओर से मेवाड़ चैम्बर भवन में एमएसएमई ऋण आउटरीच कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य एमएसएमई उद्यमों को बैंक की विभिन्न ऋण योजनाओं से जोड़ना और उन्हें सरल एवं त्वरित बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराना है।

कार्यक्रम में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया जयपुर के जोनल हेड मेहर कुमार पाणिग्रही मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, वहीं जोधपुर क्षेत्र के रीजनल हेड विभूति झा विशिष्ट अतिथि रहे। अतिथियों ने एमएसएमई क्षेत्र को मजबूत बनाने में बैंक की भूमिका पर प्रकाश डाला।

बैंक की ओर से विभिन्न लाभार्थियों को मौके पर ही ऋण स्वीकृति पत्र वितरित किए गए। बैंक अधिकारियों ने बताया कि एमएसएमई सेक्टर को बढ़ावा देने के लिए सेंट्रल बैंक द्वारा कई आसान और लाभकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं, जिनसे एमएसएमई उद्यमियों को विशेष सहूलियत मिल रही है।

इस दौरान सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया भीलवाड़ा के मुख्य प्रबंधक अशोक मंगल और अशोक टाक भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन बैंक अधिकारी प्रत्युष व्यास ने किया।

उन्नत टेक्सटाइल रीसाइक्लिंग

आईआईटी दिल्ली की तकनीक से आत्मनिर्भरता और सस्टेनेबिलिटी की दिशा में बड़ा कदम

नई दिल्ली/ देश में टेक्सटाइल रीसाइक्लिंग को नई दिशा देने वाला एक बड़ा नवाचार आईआईटी दिल्ली नेतृत्व वाले एडवांस्ड रिसर्च सेंटर द्वारा विकसित किया गया है। उच्च-प्रदर्शन वाले अरामिड वेस्ट, टेक्निकल ग्लव्स और अन्य प्रोटेक्टिव टेक्सटाइल वेस्ट को रीसाइकल करने में सक्षम इस अत्याधुनिक तकनीक को अब आधिकारिक रूप से उद्योग भागीदारों को हस्तांतरित कर दिया गया है। यह कदम न केवल भारत की टेक्सटाइल वेस्ट मैनेजमेंट क्षमता को मजबूत करेगा, बल्कि देश को सस्टेनेबल और आत्मनिर्भर उत्पादन प्रणाली की ओर एक महत्वपूर्ण दिशा भी देगा।

अरामिड और प्रोटेक्टिव टेक्सटाइल वेस्ट: सबसे चुनौतीपूर्ण श्रेणी - वर्तमान में अरामिड फाइबर, टेक्निकल ग्लव्स, फायर-रेसिस्टेंट जॉब वियर, सुरक्षा उपकरणों और रक्षा उपयोग के फैब्रिक का अपशिष्ट रीसाइक्लिंग उद्योग के लिए सबसे कठिन चुनौतियों में से एक माना जाता है। ये फाइबर अत्यधिक मजबूत, गर्मी-रोधी और टिकाऊ होते हैं। इनका अपशिष्ट सामान्य मशीनरी से रीसाइकल नहीं किया जा सकता। इसके कारण भारी मात्रा में वेस्ट लैंडफिल में जा रहा था, जिससे पर्यावरण पर गंभीर असर पड़ता था।

आईआईटी दिल्ली की नई तकनीक इस चुनौती को हल करती है, जो इन हाई-परफोरमेन्स फाइबर्स को सुरक्षित और आर्थिक रूप से दोबारा उपयोग योग्य बनाती है।

उद्योग के लिए खुला रास्ता-टेक्नोलॉजी ट्रांसफर शुरू - इस प्रोजेक्ट का सबसे बड़ा लाभ यह है कि तकनीक को अब प्रत्यक्ष रूप से उद्योगों को हस्तांतरित कर दिया गया है।

- टेक्निकल टेक्सटाइल निर्माता
- पीपीई और सुरक्षा उपकरण बनाने वाली कंपनियाँ
- रीसाइक्लिंग उद्योग और रक्षा संबंधित फाइबर प्रोसेसिंग यूनिट्स

इन सभी को अब इस तकनीक का वाणिज्यिक उपयोग करने का अवसर मिलेगा। इससे देश में ग्रीन मैन्युफैक्चरिंग को बल मिलेगा।

सस्टेनेबिलिटी और पर्यावरण संरक्षण में बड़ी उपलब्धि - टेक्सटाइल वेस्ट का प्रबंधन दुनिया के सबसे बड़े पर्यावरणीय मुद्दों में से एक है। आईआईटी दिल्ली की नई तकनीक वेस्ट को लैंडफिल में जाने से बचाएगी, कार्बन फुटप्रिंट कम करेगी, ऊर्जा कुशल रीसाइक्लिंग प्रक्रिया को बढ़ावा देगी और तकनीकी वस्त्र उद्योग को सर्कुलर इकॉनॉमी की ओर लेकर जाएगी। विशेषज्ञों का मानना है कि यह टेक्नोलॉजी भारी पैमाने पर अपनाई जाती है तो भारत का टेक्निकल टेक्सटाइल सेक्टर वैश्विक बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धी होगा।

आत्मनिर्भर भारत और टेक्सटाइल 4.0 की दिशा में कदम- टेक्नोलॉजी ट्रांसफर का यह कदम देश को दो प्रमुख क्षेत्रों में लाभ देगा

आत्मनिर्भरता- पहले जिन विशेष फाइबरों की रीसाइक्लिंग टेक्नोलॉजी आयात करनी पड़ती थी, अब वह देश में उपलब्ध है।

टेक्सटाइल 4.0- हाई-टेक मटेरियल, स्मार्ट प्रोसेसिंग और ग्रीन तकनीक पर आधारित उत्पादन की ओर उद्योग तेजी से बढ़ सकेगा।

आईआईटी दिल्ली की यह पहल भारत के टेक्निकल टेक्सटाइल सेक्टर को एक नई पहचान देने के साथ-साथ सस्टेनेबल विनिर्माण और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में निर्णायक योगदान मानी जा रही है। उद्योग जगत और सरकार दोनों इसे भविष्य के लिए गेमचेंजर कदम बता रहे हैं।

दक्षिण भारत के टेक्सटाइल उद्योग में नया मोड़

एमएमएफ की उड़ान, निर्यात पर टैरिफ का दबाव और घरेलू मांग का उभार

बैंगलोर/मिरर ब्यूरो

दक्षिण भारत का टेक्सटाइल सेक्टर, विशेषकर तिरुपुर, कोयंबटूर, इरोड, मदुरै, विरुधुनगर और बेंगलुरु जैसे बड़े हब इन दिनों तेज़ बदलावों और वैश्विक चुनौतियों से गुज़रते हुए एक नए औद्योगिक दौर की ओर बढ़ रहा है। 2025 में उद्योग ने एक ओर नये अवसरों की चमक देखी, तो दूसरी ओर अमेरिकी टैरिफ के कारण निर्यात बाजार में अनिश्चितता का सामना भी किया।

एमएमएफ आधारित उत्पादन बना भविष्य की कुंजी- दक्षिण भारत का निटवियर और गारमेंट उद्योग लंबे समय से कॉटन पर आधारित रहा है। लेकिन 2025 में तिरुपुर व कोयंबटूर की यूनिटों ने बड़े पैमाने पर मैनमेड फाइबर की ओर रुख किया है। इसका मुख्य कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में एमएमएफ वस्त्रों की मांग का लगातार बढ़ना और कॉटन की बढ़ती लागत है।

उद्योग विशेषज्ञों के अनुसार, 2030 तक दक्षिण भारत केवल एमएमएफ आधारित वस्त्रों से 25,000 करोड़ रुपये से अधिक का निर्यात कर सकता है। कई यूनिट्स ने पोलिएस्टर ब्लेंड्स, फंक्शनल स्पोर्ट्स वियर, एंटी-बैक्टीरियल फैब्रिक्स और टेक्निकल टेक्सटाइल्स में निवेश बढ़ाया है।

पीएम मित्रा पार्क और निवेश ने बढ़ाई रफ्तार - तमिलनाडु के विरुधुनगर में पीएम मित्रा पार्क की घोषणा दक्षिण के टेक्सटाइल उद्योग के लिए बड़ा कदम साबित हुई है। आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, प्रोसेसिंग सुविधा, आरएण्डडी केंद्र और ईको-फ्रेंडली डाईंग यूनिटें उद्योग को नई ऊँचाइयाँ देने की क्षमता रखती हैं। इससे एमएसएमई सेक्टर को लाभ होगा और हजारों नए रोजगार पैदा होंगे।

अमेरिकी 50 प्रतिशत टैरिफ, बड़ा झटका - साल 2025 में अमेरिका द्वारा भारतीय वस्त्रों पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाने से दक्षिण भारत के कई क्लस्टर प्रभावित हुए। तिरुपुर की लगभग 40 प्रतिशत यूनिटें अमेरिकी बाजार पर निर्भर हैं, इसलिए इस शुल्क ने ऑर्डर बुकिंग और प्रोडक्शन दोनों को कमज़ोर किया है।

कई फैक्ट्रियों में शिफ्ट सिस्टम कम किया गया, कुछ जगहों पर वर्कर्स की ओवरटाइम सुविधाएँ भी रोक दी गईं। हालांकि उद्योग ने तुकर्ह, यूएई, यूके और अफ्रीका के नए बाजारों में प्रवेश करके गिरावट की भरपाई करने की कोशिश शुरू कर दी है।

घरेलू बाजार बना सहारा-

निर्यात घटने के बावजूद घरेलू बाजार में मांग मजबूत बनी हुई है। दक्षिण भारतीय ब्रांड्स, खासकर निटवियर, एथेनिक वियर, बच्चों के कपड़े और लेडीज गारमेंट्स की बिक्री त्योहार और विवाह सीजन में काफी बेहतर रही।

मदुरै, इरोड और बेंगलुरु से थोक रवानगी में 15-25 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। कई ब्रांड्स ने फास्ट-फैशन, डिजिटल प्रिंटिंग और ई-कॉमर्स आधारित सप्लाई मॉडल अपनाकर नए ग्राहकों को आकर्षित किया है।

एमएसएमई सेक्टर में नया आत्मविश्वास - सरकार ने कच्चे माल की उपलब्धता आसान करने, ड्यूटी स्ट्रक्चर में सुधार और टेक्नोलॉजी अपग्रेडेशन फंड की मदद से छोटे उद्योगों को राहत दी है। इससे कई यूनिट्स नई मशीनरी, रोबोटिक स्टिचिंग और कम पानी वाली डाईंग तकनीक की ओर बढ़ रही हैं।

कुल मिलाकर दक्षिण भारत का टेक्सटाइल उद्योग इस समय संक्रमण के दौर से गुजर रहा है, जहाँ बाहरी चुनौतियों के बावजूद उद्योग ने नई टेक्नोलॉजी, एमएमएफ, डिजाइन-इनोवेशन और घरेलू मांग के माध्यम से भविष्य के लिए मजबूत आधार तैयार किया है।

अगले 12 महीनों में उम्मीद है कि निर्यात सुधार, नीतिगत सहयोग और आधुनिक मशीनरी दक्षिण भारत को फिर से भारत का सबसे तेज़ी से बढ़ता टेक्सटाइल हब बना सकते हैं।

Available at all leading retail outlets and Siyaram's Shops across the country. For trade/corporate enquiries, contact: 022-68330500. Toll-free No.: 1800 209 4005.
For franchise enquiries, contact: 09820197273. Email: enquiries@siyaram.com | www.siyaram.com Follow us on:

ARHAM SPINNING MILLS
Contact: 9352110125

2/40 CCW	255
2/30 Pc 65/35 Combed	230
1/20 Pc 65/35 Combed	190
1/30 Pc Combed 65/35	200
1/20 Cotton Lycra	260
Plus Tax	57
10 PC 65/35 CW	178
20 PC	185
30 PC	194
1/8 POLY SLUB	134
1/10 POLY SLUB	138
1/30 CCW	255
1/20 COTTON LYCRA	260
2/40 CCE ELI	261

VISAKA IND. LTD.
Contact: 9351400471

2/20 Poly Grey	157
2/24 Poly Grey	162
2/30 Poly Grey	167
2/40 Poly Grey	195
2/60 Poly Grey	248
2/76 Poly Grey	305
2/30 PV Black	223
2/40 PV Black	263
2/30 PV HD Dyed	250

POLYPICK THREADS P. LTD.
Contact: 9351524689

150/ 2 BRT	155
150/ 2 DOPE DYED LIGHT	165
150/2 DOPE DYDE DARK	175
150/ 2 COLOR PLUS	175
150/2 RAYON	575
180/2 RAYON	495
2/40 ACRYLIC	445
ZARI GOLDEN	350
ZARI SILVER	350

RAGHAV GROUP
Contact: 9414111402
TRIDENT LIMITED

10 OE	168
14 OE	168
16 OE	172
20 OE	190
30 CWC	276
2/40 CW ELLY	268
40 CW COMPACT	320
50 CW COMPACT	355
60 CW COMPACT	395

SIDDHESHWAR TEXTILE
MOB. 94141-12223
MONOGRAM YARN-Viscose Rayon

180/2 DYED	490
150/2 DYED	540
150/2 Dyed Export surplus	500
120/2 Dyed	580
Polyester Bright Yarn (dope dyed)	
150/2, Dark	175
150/2 Light	165
150/2 color plus	165
150/2 bright catonic	170
150/2 Floroscent	185
150/2 White Bright	155
100/2 Dark	195
100/2 light	185
100/2 catonic bright	190
Shade-Floroscet	205
Acrylic & Viscose spun	
2/40 100% golden	460
2/34 Golden pearl	490
2/40 Acrylic 100% grey	430
2/36 Grey Pearl	460
2/30 Viscose 100% grey	230
2/40 Viscose	260
METALLIC YARN	
Golden/silver -440 denier	410
Golden/silver-120 denier	620
FANCY YARN	
2/48 PVT Magic Slub-New Delhi	205
2/48 PT Magic Slub-New York	NA
2/48 PT Blach Coin	NA
POLYESTER TEXTURISE TWISTED YARN	
200/96/325 Black	150
340 Dn Black Horen	NA
340 Denier Melody	NA
340 Denier Fortuner Twisted	NA
150/325 Bright Cationic	NA
150/325 Bright Black	NA

MODTEX TEXTURISER
Contact: 98292 50430

150/400 Cone DYED	200

Cd : 3rs/kg

Gimatex Industries Ltd.
Contact:9414110791

2/30 PV Black	220
2/40 PV Black	250
2/30PVBlackSlub	NIL
2/30 Gray	191
2/30 Gray Slub	221
2/40 Gray	221

RATAN BARJATIYA SPINNING PVT. LTD.
BARJATIYA BROTHERS
INDENTING AGENT & DEALERS
All Type of Textiles Yarn, Swing Threads, Multi Fold Yarn & Fabrics

MILLS
- RELIANCE INDUSTRIES
- INDORAMA SYNTHETICS LTD.
- SURYA GROUP OF COMPANY HYDERABAD
- SWATI SPINNING MILLS
- PEE VEE TEXTILES
- ANKUR UDYOG LTD.
- Jagdamba Spinning Mills Ltd. Nepal
- Aruppukottai Shri Jayavilas Ltd.
- shri Karthikeya Spg. Weaving Mills Pvt. Ltd.
- Punjab Spin & Linters
- Garg Acrylics Ltd.
- Shri Meenakashi Mill Ltd.
- Kennigton Industries Pvt. Ltd.
- Sivanta Spuntex Pvt. Ltd

E-165, RIICO Indust. Area, Near RIICO Office, Pur Road, BHILWARA (Raj.)
Talefax: 01482-248144-45, Mobile: 94141-13144, 94141-11036
E-mail: barjatiya_brothers@yahoo.co.in, barjatiyabrothers2014@gmail.com

BARJATIYA BROTHERS
Contact: 9928913144, 8764286144
RB SPINNERS, SURYALATA, ANKUR UDYOG, JAGDAMBA SPINNING

2/60 PV	270
2/40 PV	205
2/30 PV	178
2/24 PV	173
2/20 PV	168
2/18 PV	165
2/15 PV	161
1/15 PV	150
Polyester Yarn	
2/60 Poly	235
2/40 Poly	185
2/30 Poly	158
2/24 Poly	154
2/20 Poly	148
2/15 Poly	140
Recycled Polyester yarn	
2/40 recycled	188
2/30 recycled	150
2/20 recycled	136
2/15 recycled	130
1/15 recycled	118
PC Yarn	
2/40 PC	245
2/30 PC	225
Black Yarn	
2/30 PV	160
2/30 PV	198
2/47 poly magic	170
2/47 pv magic	195

R.T.M.
Contact: 98290 47404

2/18 Pav 65/35	190
2/30 PV NTBL	228
2/30 PV 65/35 Dyed milange	226
2/30 PV 65/35 Black milange	224.60
2/40 PV 65/35 HTPI	290.60

LKY Mills, AHMEDABAD
Contact : 098797 62474

20 POLY MVS	141
30 POLY MVS	151
40 POLY MVS	166
12 POLY MVS	128
20 VISCOSE VORTEX	195
30 VISO VORTEX	208
40 VISO VORTEX	235
10s poly slub	135
20s poly slub	145
30S GREY ACRYLIC	240
40S GREY ACRYLIC	270
2/28 DYED ACRYLIC	300
1/16 DYED ACRYLIC	300
40 POLYESTER DYED	165
2/40 DYED ACRYLCI	360
1/40 DYED ACRYLIC	350
26 PA DYED	165
30 RECYCLED	NA
40 RECYCLED	NA
40 AP DYED	185
2/36 ACRYLIC HANK	270
2/40 ACRYLIC HANK	280
16 CP OPEN END	95
20S VISCOSE RING	160
2/16 VISCOSE RING	NA
2/16 ACRYLIC	215
2/20 ACRYLIC	230
16S ACRYLIC	220
2/10 PSY	135

VALSON INDUSTRIES LIMITED
(MOB. 9414112223)
(DYED YARN)

Denier	LT/MD	DARK
150/0 Weft Dyed	221.50	231.50
150/0 Rotto Dyed	226.50	236.50
150/350 Cone Dyed	237.50	247.50
85/ Weft Dyed	227.50	237.50
85/0 Roto Dyed	229.50	239.50
85/300 Dyed	245.50	255.50
85 Royal Roto Twinst	252.50	262.50
80/108 Micro Royal	258.00	268.00
80/34/600 Dyed Yarn	262.00	272.00
80/72 Roto Cutluk Royal Roto	266.50	276.50
80/72 Roto Cutluk Dyed	242.00	252.50
150/350 Bright Dyed	265.50	275.50
85/Weft Dyed	226.50	236.50

(GREY YARN)

80/0 White Yarn	133
80/Roto White Yarn	134
80/300 Grey Yarn	146
80 Royal Warp Rotto	148
80/72/0 FD Cotlook HIM	129
80/2/72/300 FD ROTO	167
80/72/2 Royal Warp Catonic	179
150/325 Twisted Grey	137
150/500Dope Dyed Black	151
150/500 DOPE DYDE BLACK	150
155/2/250 TPM White Yarn	138
80/1000 White Yarn	172
80/600 or 100/600 White Yarn	167
80/72/2 Him catonic	148

(Fancy Yarn)

250 Galaxy	NA
160 Tex Space Dyed Sober	NA
170/350 Br. Space Dyed Ellora	NA
170/350 Sundram	NA

C.T.M. Contact: 9829045130

2/30 NTBL	216
2/18 DYED	176
2/40 DYED	256
2/50 DYED	321
2/30 FROSTED	216

PEE VEE TEXTILE, NAGPUR
Contact: 98290 46955

15PV	152
SURYALATA	
15Polyester	176

Modern Threads India Ltd.
Contact: 72300 12478

2/18 PV Dyed	200
2/30 PV Dyed	235
1/15 PV Dyed	160
2/18 Poly Black	135
2/18 Poly Dyed	170
2/20 & 3/20 Poly Black RT	142

RELIANCE CHEMOTEX IND. LTD.
Contact: 9029366939

2/30 SOLID DYED	219
2/40 SOLID TFO	259
2/30 FROSTED	224
2/18 BLACK	154
2/40 Black	234
2/50 CV German	359

Prahlad Rai & Co. (Gorakhpur)
Contact: 099358 27000
ANKUR

1/20 pv	NA
1/15 pv	NA
2/30 pv	NA
Jaanvi	
1/15PSY	127
Triveni	
2/40 PV	218
2/30 Pv	186
1/20 Pv	158
1/15 Pv	152

Pawan Enterpises
Contact: 9414111656
Dubble All Yarn Mill TFO

1/10 Polyster	134
1/12 Polyster	135
1/15 Polyster	134
1/30 Polyster	151
2/20 Polyster	151
2/24 Polyster	160
1/10 Pv grey	150
1/15 Pv grey	152
1/20 Pv grey	162
1/24 Pv grey	167
1/30 Pv grey	172
2/15 Pv 70/30grey	162
2/18Pv 70/30grey	167
2/20 Pv 70/30grey	175
2/24 Pv 70/30grey	183
2/30 Pv 70/30grey	190
1/40 Pv grey	192
1/15 Pv 70/30 black	160
1/30 Pv 70/30 black	177
2/30 Pv 70/30 black	195
1/40 Pv 70/30 black	200
2/40 Pv 70/30 black	223
2/30 Pv 70/30 melange	195
2/30 100% Viscose	220
2/40 100% Viscose	245

GRASIM INDUSTRIES LTD.
Contact: 93521 45544

2/30NTBL	220
2/40 DYED	270
2/50 DYED	330

टेक्सटाइल कंपनियों के शेयर्स में घत-बढ़त

Courtesy by ProShareHub BEST PROFIT IN BLUE CHIP STOCKS

TEXTILE COMPANIES LIST

S.NO.	COMPANY	FACE VALUE	PRICE AS ON 26/06/2025	PRICE AS ON 11/07/2025	change in %
1	AARVEE DENIMS	10	150.15	154.41	3%
2	SUNRAKSHAK(AK SPINTEX)	10	1228.5	1350.2	10%
3	ALOK INDUSTRIES	1	20.37	20.79	2%
4	ARVIND LTD.	10	353.55	336.25	-5%
5	BANSWARA SYNTEX	5	145.95	148.19	2%
6	BOMBAY DYEING	2	157.16	159.88	2%
7	DAMODAR IND	5	35.75	38.81	9%
8	DCM	10	109.53	118.18	8%
9	DEEPAK SPINNERS	10	144.95	148.9	3%
10	DONEAR	2	108.2	109.34	1%
11	FILATEX INDIA	2	55.39	59.36	7%
12	GARWARE TECH FIBERS	10	915	911.75	0%
13	GINI SILK	10	85.6	112.77	32%
14	GOKALDAS EXPORTS	5	882.2	915.05	4%
15	INDO RAMA SYNTHETICS	10	48.42	51.28	6%
16	JCT	2.5	1.21	1.21	0%
17	KAMADGIRI FASHIONS	10	100	101.35	1%
18	LUX INDUSTRIES	2	1454.4	1466	1%
19	MAFATLAL	10	126.3	126.3	0%
20	MARAL OVERSEAS	10	73.89	73.77	0%
21	MORARJEE TEX	7	8.25	8.25	0%
22	NAHAR SPINNING	5	279.35	272.1	-3%
23	NITIN SPINNERS	10	398	385.5	-3%
24	ORBIT EXPORTS	10	214.36	214.73	0%
25	RAJAPALAYAM MILLS	10	949	990.9	4%
26	RAYMOND	10	598.95	697.7	16%
27	REL CHEMOTEX	10	181.49	191.89	6%
28	RSWM LTD.	10	171.83	170.97	-1%
29	RUBY MILLS	5	235.53	240.17	2%
30	SANGAM	10	440.75	451.15	2%
31	SH. DINESH MILLS	10	324.5	311.35	-4%
32	SHEELA FOAM	5	744.4	677.4	-9%
33	SHEKHAWATI POLY YARN	10	23.9	24.6	3%
34	SIYARAM SILK	2	699.65	720.45	3%
35	SUTLEJ	1	39.85	45.69	15%
36	TRIDENT LTD.	1	31.59	31.7	0%
37	VARDHMAN TEX	2	485.8	497.65	2%
38	WELSPUN	1	937.75	910.95	-3%

RECOMMENDATION: INDIAN ACRYLIC @12.1 TGT 30/40/50
PAUL MERCHANTS LTD @1256 TGT: 6000
EKANSH CONCEPTS @30.9 TGT 300/500
DMR HYDRO ENGINEERING @32 TGT 300
MP TODAY @40 TGT 400
GAJANAN SECURITIES @100 TGT 500/1000

TELEGRAM CHANNEL: https://t.me/prosharehub(FIND PROSHAREHUB ON TELEGRAM)
WHATSAPP:https://chat.whatsapp.com/J0jNZImKT2dJKPaQS3Z0oW

सिंथेटिक यार्न की कीमतें स्थिर : ब्लैंडेड यार्न की ओर रुख

मुम्बई/मिरर ब्यूरो

यार्न मार्केट में स्थिरता नहीं है। स्थानीय स्तर पर यार्न की मांग कमजोर है। यार्न बाजार में उतार एवं चढ़ाव जारी है। कभी भाव थोड़े बढ़ते है तो लेवाली का सपोर्ट नहीं मिलने पर उतना ही घट जाते है। ऐसी स्थितियां कॉटन यार्न और सिंथेटिक यार्न दोनों में है। सिंथेटिक यार्न के भाव स्थिर है। यार्न की मांग कमजोर है, किंतु बाजार का रूख मजबूत है। कॉटन यार्न की सप्लाई अच्छी है। वीवर्स यार्न की खरीदी कम कर रहे है। वीविंग इकाइयों में कपड़ों का उत्पादन आज भी 50 प्रतिशत से कम है। सामने स्कूल यूनिफॉर्म की सीजन है। समर सीजन के लिए की तैयारियों की जा रही है, तथापि यार्न बाजार में करेंट नहीं है। नई रूई यार्न उत्पादन के लिए हल्की है।

हल्की और नमी युक्त रूई से यार्न का उत्पादन करने से जहां यार्न की प्राप्ति कम होती है, तो वहीं मिलों को यार्न की गुणवत्ता के साथ समझौता करना पड़ता है। निर्यात मार्केट में कपड़ों की मांग इको फ्रेंडली तथा कम वजनी कपड़ों की बढ़ रही है, इसलिए लिनन एवं विस्कोस मिश्रित फाइबर की मांग अधिक रहने की संभावना है। राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर एमएमएफ टेक्सटाइल के निर्यात की संभावनाएं अधिक होने से कॉटन यार्न से ज्यादा हाल विभिन्न ब्लैंडेड यार्न की मांग बढ़ सकती है। पोलिएस्टर यार्न के कच्चे माल में उत्पादकों की मोनोपोली टूटने पर भाव घट सकते है। वीवर्स को यार्न सस्ता पड़ सकता है, दूसरे लोकल स्पिनर्स से खरीदी करने की बाध्यता नहीं रहेगी।

Textile Exhibition & Trade Fair in India

Intimasia Mumbai 2025 (IM23)
17 to 19 Dec 2025
Bombay Exhibition Centre (BEC), **Mumbai**

INTEX India International Textile Exhibition
24 to 26 Dec 2025
Bombay Exhibition Centre (BEC), **Mumbai**

YARNEX/ TEXINDIA/ DYECHEM
19 – 21, December 2025
Venue: Ludhiana
Organizer: SS Textile Media Pvt. Ltd.

DYECHEM WORLD
8 – 10, January 2026
Venue: IKFA Exhibition Centre, Tirupur
Organizer: Textile Excellence

SITME
09 – 12, January 2026
Surat International Exhibition & Convention Centre (SIECC), Sarsana, Surat
Organizer: SGCCI

GARFAB-TX
23 – 25, January 2026
Venue: Rajasthan International Center, Jaipur
Organizer: Vardaan Events Pvt. Ltd.

SIMA TEXFAIR 2026
06– 09, March, 2026
CODISSIA Trade Fair Complex,Coimbatore
Organizer: The Southern India Mills' Association

BHARAT TEX 2026
14 – 17, July 2026
Bharat Mandapam, Pragati Maidan, New Delhi
Organizer: Bharat Tex Trade Federation

CHINAR FABRICS बनी देश-विदेश की पसंद
जल्द करेगा समर सीजन की भव्य कान्फ्रेंस

भिवानी/ देश का प्रतिष्ठित ब्राण्ड चिनार फैब्रिक्स आज न सिर्फ भारतीय बाजार में बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी खास पहचान बना चुका है। पिछले वर्षों की तुलना में इस वर्ष ब्राण्ड की मांग में बड़ी वृद्धि दर्ज की गई है, जो कंपनी के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। चिनार फैब्रिक्स के डायरेक्टर उज्ज्वल अग्रवाल ने बताया कि ब्राण्ड ने नकारात्मक परिस्थितियों में भी अपनी साख बनाए रखी और व्यापारियों व उपभोक्ताओं के लिए निरंतर नए नए, आकर्षक और ट्रेंडिंग डिज़ाइन उपलब्ध कराए। यही कारण है कि आज चिनार फैब्रिक्स को देशभर का उपभोक्ता नाम से मांगता है।

उज्ज्वल अग्रवाल ने बताया कि चिनार फैब्रिक्स ने पिछले महीनों में न केवल घरेलू बाजार को मजबूत किया, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी बड़ी मात्रा में एक्सपोर्ट किया है। उन्होंने बताया कि विदेशी व्यापारियों ने भिवानी आकर चिनार फैब्रिक्स की उत्पादन व्यवस्था, डिज़ाइनिंग, क्वालिटी कंट्रोल सिस्टम एवं पैकेजिंग का अवलोकन किया और कंपनी के 'चेन सिस्टम' व उन्नत तकनीक से प्रभावित होकर सराहना की। विंटर सीजन में कंपनी द्वारा लश्चन्च किए गए उत्पादों को मार्केट से बेहद शानदार प्रतिक्रिया मिली और सेल पिछले वर्ष की तुलना में काफी अधिक रही।

मार्केटिंग अध्यक्ष दीपक अग्रवाल ने बताया कि चिनार फैब्रिक्स के उत्पाद पूरी तरह मार्केट की पसंद और वर्तमान फैशन ट्रेंड के अनुसार तैयार किए जाते हैं। कंपनी अपनी पहचान उच्च गुणवत्ता, बेहतरीन सटीकता और वाजिब दामों पर बनाए रखने में सफल रही है। कंपनी की पैन्ट शर्ट, सफारी सूट, कुर्ता पैजामा, लिनन, कॉटन लिनन, टीविड और शर्टिंग की विस्तृत रेंज ने कपड़ा बाजार में मजबूत पकड़ कायम की है। इसके साथ ही चिनार फैब्रिक्स की अंतरराष्ट्रीय स्तर की पैकेजिंग क्वालिटी ने भी बाजार में खास पहचान बनाई है।

कंपनी के चेयरमैन पुरुषोतमदास अग्रवाल ने बताया कि उत्पादन से लेकर मार्केटिंग टीम तक सभी विभाग गुणवत्ता और सटीकता पर पूरा ध्यान दे रहे हैं। यही वजह है कि चिनार फैब्रिक्स आज देश के कपड़ा बाजार में एक विश्वसनीय और पसंदीदा ब्राण्ड बन चुका है। उन्होंने कहा कि कंपनी जल्द ही आने वाले समर सीजन की प्लानिंग के लिए एक भव्य कश्चन्फ्रेंस आयोजित करने जा रही है। इस कश्चन्फ्रेंस में देश के विभिन्न राज्यों से व्यापारी शामिल होकर नए डिज़ाइन, मार्केट ट्रेंड और आगामी सीजन की मांग के बारे में सुझाव देंगे।

उन्होंने कहा कि कंपनी अपने खुरदरा व्यापारियों के लिए नई स्कीम्स और नए नए डिज़ाइनों की उपलब्धता सुनिश्चित कर उनके क्षेत्रों में बिक्री बढ़ाने का कार्य भी कर रही है। चिनार फैब्रिक्स का लक्ष्य है कि समर सीजन 2026 के लिए उपभोक्ताओं को सर्वश्रेष्ठ, आकर्षक और ट्रेंड-आधारित डिज़ाइन समय पर उपलब्ध कराए जा सकें।

मंदी के बीच हलचल शुरू, मौसम व मांग के उतार - चढ़ाव से बाजार में अनिश्चितता

उत्पादकों में गुणवत्ता व ब्रांडिंग को लेकर तेजी

बालोतरा/एल.सी. पुनीत

आधे नवंबर के गुजर जाने के बाद भी बालोतरा के वस्त्र उद्योग में उत्पादन और चालानी की रफ्तार अपेक्षित स्तर पर नहीं पहुंची है। व्यापारियों को उम्मीद थी कि इस अवधि तक बाज़ार में तेज़ ग्राहकी का दौर शुरू हो जाएगा, लेकिन सामान्य ग्राहकी से ऊपर ग्राफ नहीं चढ़ पाया है। हालांकि, जिन नामीगिरामी प्रतिष्ठानों के पास अपनी विशिष्ट गुणवत्ता की ब्रांड पहचान है, उनके पास ऑर्डरों की भरमार है और उनकी चालानी भी पूरी तरह संतोषजनक चल रही है।

ग्रे कपड़े के भाव स्थिर बने हुए हैं और उनमें बढ़ोतरी के संकेत भी नहीं दिख रहे। इसी कारण ग्रे कपड़े के सौदे सीमित स्तर पर ही हो रहे हैं। करखानों को सुचारू रूप से चलाने के लिए कुछ आंशिक सौदों पर ही काम किया जा रहा है। इस बीच तापमान में गिरावट के बाद सर्दी की शुरुआत ने माल को सुखाने में नई परेशानियाँ पैदा कर दी हैं, जिससे उत्पादन की गति पर भी असर पड़ रहा है।

मौसम परिवर्तन का असर बाजार की मांग पर भी देखा जा रहा है। गर्म मालों की मांग सूती वस्त्रों की तुलना में बढ़ रही है। इसके बाद भी विवाह, सामाजिक कार्यक्रमों व नियमित उपयोग के कारण पोपलीन, पेटीकोट, टेंट क्लॉथ, नाइटर क्लॉथ, अस्तर, रूबिया, साड़ी फॉल, शर्टिंग पोकेटिंग आदि उत्पादों की माँग स्थिर बनी हुई है।

उत्पादकों ने माल को अधिक आकर्षक और प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए विशेष प्रयास शुरू कर दिए हैं। पहले जहां कई इकाइयाँ प्रचलित ब्रांडों या लोगो की नकल करने की कोशिश करती थीं, अब उनमें स्वयं की स्टाइल, स्वयं के लोगो और अपनी पहचान स्थापित करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। कई उद्यमी अब अपने ट्रेडमार्क को पंजीकृत कराने पर गंभीरता से विचार कर रहे हैं। इससे ब्राण्ड रजिस्ट्रेशन में आने वाली बाधाएँ भी कम होंगी और अल्प समय में उत्पादकों को कानूनी सुरक्षा और बाजार में पहचान मिल सकेगी।

औद्योगिक क्षेत्रों में लंबे समय से छाई सुस्ती अब धीरे धीरे खत्म होती दिख रही है। श्रमिकों के लौटने से उत्पादन में वृद्धि के संकेत हैं और सीजन को देखते हुए आने वाले दिनों में 'माल लाओ लाओ' जैसी स्थिति बनने की संभावनाएँ मजबूत हो रही हैं। हालांकि, रकम की आवक अभी भी कमजोर है और भुगतान संकट की समस्या बनी हुई है। शेयर बाजार में बड़ी मात्रा में निवेश होने से बाजार में चलन में रहने वाली रकम अन्य क्षेत्रों में अटक रही है, जिससे व्यापारिक नकदी प्रवाह प्रभावित हो रहा है।

स्थानीय उद्यमी अपने उत्पादों में नवीनता और बेहतर गुणवत्ता लाने पर विशेष ध्यान दे रहे हैं, लेकिन लागत न बढ़े , इस सिद्धांत को प्राथमिकता बनाया हुआ है। यही कारण है कि बालोतरा के उत्पाद देशभर में कम लागत और बेहतर गुणवत्ता के लिए जाने जाते हैं और इसी वजह से उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान कायम की है।

इस बीच शहर में धार्मिक वातावरण भी भावनात्मक रहा। सादगी, त्याग, निष्ठा और तपस्या के प्रतीक मुनिश्री शालीभद्र जी मा.सा. के संथारा पूर्वक देहावसान पर आयोजित गुणानुवाद सभा में हजारों श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर उनके आदर्श जीवन को अपनाने का संकल्प व्यक्त किया। मुनिश्री द्वारा करोड़ों की संपत्ति का त्याग कर प्रस्तुत किया गया अद्वितीय उदाहरण समाज के लिए प्रेरणा स्रोत बना हुआ है। उनकी अंतिम यात्रा बैकुंठी नगर के मुख्य मार्गो से होते हुए श्मशान घाट तक पहुंची, जहाँ धार्मिक उद्घोषों के बीच श्रद्धालुओं ने उनकी तप साधना को नमन किया।

कपड़ा बाजार में सुस्ती बरक़रार, पीसी पर दबाव और सूती धागा कमजोर

कारोबारियों में अनिश्चितता का माहौल

मालेगांव/पूरण सोमानी

मौसम में तेज़ी से हो रहे बदलाव की तरह ही मालेगांव की सूत और कपड़ा मंडी भी लगातार उतार चढ़ाव से गुजर रही है। दो दिन पड़ी कड़ाके की ठंड फिर अचानक गायब हो गई, नाशिक में तापमान 6 7 डिग्री तक पहुँच गया था, जबकि मालेगांव लगभग 10 डिग्री के आस-पास रहा। अब फिर से ठंडक कम हो गई है, जिससे बाजार व्यवहार में भी सुस्ती देखी जा रही है। राजनीतिक रूप से बिहार में एनडीए की भारी बहुमत वाली सरकार बनने के बाद माहौल स्थिर हुआ है, लेकिन इसका बड़ा प्रभाव कपड़ा कारोबार में अभी नजर नहीं आ रहा है। सोना-चांदी की चमक भी उच्चतम भावों से थोड़ी कम हुई है और शेयर बाजार अपनी ही चाल से चल रहा है।

टेक्सटाइल इंडस्ट्री में पावरलूम सेक्टर की मालेगांव मंडी लंबे समय से कमजोर स्थिति में है। कपड़ों में पीसी के अलावा कहीं भी विशेष मुनाफा नहीं है, जबकि पीसी में पहले मिलने वाला बड़ा मुनाफा लगातार घट रहा है। सूत बाजार में रोटो यार्न को छोड़कर अधिकांश धागों में गिरावट का दौर जारी है। रोटो यार्न स्थिर है, जबकि केम्ब्रिक 56 बाई 52 में रोज़ भावों का उतार चढ़ाव दिख रहा है। पोपलीन में कोई बड़ी हलचल नहीं है, जबकि रोटो और व्हीपी के कपड़ों में गिरावट दर्ज की गई है।

सूती धागा भी कमजोर बना हुआ है। सूत व्यवसायी बादल चौधरी ने बताया कि दीपावली के पहले जैसी मंदी अब भी बनी है और बाजार दिसंबर के बाद की आयात नीति पर निर्भर रहेगा। बुनकर स्टॉक नहीं रखते, केवल आवक व सौदे पर काम चल रहा है। फुटकर ग्राहकी भी सीमित है। सूत व्यापारी भरत चौधरी के अनुसार रोटो में जीएसटी के बाद से भाव स्थिर हैं, जबकि पीसी यार्न लगातार घट रहा है। हालाँकि दिसंबर तक कपड़ा और यार्न की बिक्री ठीक-ठाक रही है।

Flagship Stores – Palladium Mall, Mumbai | Connaught Place, New Delhi | Website: www.navyasabyliva.in
For franchise enquiries, contact Mr. Omprakash Rai +91 9867641287

सूरत मर्केंटाइल एसोसिएशन की 209वीं नियमित साप्ताहिक समस्या समाधान मीटिंग सम्पन्न

122 व्यापारियों की उपस्थिति रही, समस्या-समाधान से जुड़े 11 आवेदन आए

सूरत/गणपत भंसाली

मर्केंटाइल एसोसिएशन की 209वीं नियमित साप्ताहिक समस्या समाधान मीटिंग का आयोजन व्यापारी भाईयों की नि:स्वार्थ सेवा में माहेश्वरी भवन में 'एसएमए' प्रमुख नरेन्द्र साबू व उनकी पूरी पंच पैनल एवं कोर कमेटी टीम' की अगुवाई में आयोजित की गई है।

इस सप्ताह की मिटिंग में 122 व्यापारी भाईयों की सादर उपस्थिति रही और 11 आवेदन पत्र समस्या समाधान हेतु पर सुनवाई हुई जिसमें से 1आवेदन का समाधान तुरंत बातचीत द्वारा किया तथा बकाया आवेदन मामलें पंच पैनल एवं लीगल टीम को सौंप दिये गये हैं जो की समयानुसार समाधान प्रक्रिया में आ जायेंगे।

सूरत मर्केंटाइल एसोसिएशन की कोर-कमेटी ने सर्वसम्मति से श्री नरेंद्र साबू को तीसरे कार्यकाल के लिए अध्यक्ष का पुन: पदभार सौंप दिया है। इस प्रक्रिया में समस्त कोर कमेटी एवं कार्यकारिणी मेंबर्स ने नरेंद्र साबू को लगातार 5 साल से संगठन का नेतृत्व संभालने के लिए धन्यवाद दिया और उनको तीसरे कार्यकाल के लिए सर्वसम्मति से निर्वाचित अध्यक्ष घोषित किया है।

मीटिंग में चर्चा का मुख्य विषय कम पूंजी के जो छोटे व्यापारी हैं उनकी स्थिति बहुत ही नाजुक हो रही है उनकी जो पूंजी है अधिकतर जो उन्होंने गलत उधर बांटी हुई है उसमें फंसी हुई है जो बहुत चिंता का विषय है।

संगठन के अध्यक्ष ने बताया कि जो भी व्यापारी भाई का सालाना टर्नओवर 5 करोड़ से कम है, उन्हें बहुत सोच समझ कर व्यापार करना चाहिए नहीं तो उनको अपना अस्तित्व बचाना मुश्किल हो जाएगा।

दीपावली के बाद भी ग्राहकी उठी नहीं है ग्राहकी अभी बहुत कमजोर है देश में सभी मंडियां शांत है व्यापार में कोई उठाव नहीं है।

इस मीटिंग में मुख्य मेहमान शहर की मशहूर दंत चिकित्सक डा. सोनल परमार और सुमंगल यात्रा के डायरेक्टर श्री दीपक महेश्वरी की सादर उपस्थित हुए है।

साथ ही यंग जेनरेशन और व्यापारी भाइयों की अगली पीढ़ी के बच्चे आये, जिनको सभी नवयुवक उद्योगपति की व्याख्यान से लाभ हुआ।

नवयुवक उद्यमियों में जागरूकता के लिए शहर के टेक्सटाइल और विविध क्षेत्र से नवयुवक उद्योगपतियों को सम्मानित किया गया जिनकी उम्र 30 वर्ष से 40 वर्ष है और आप लोग बहुत बड़ा व्यापार कर रहे हैं और पारिवारिक व्यापार को आगे अच्छी तरह ले जा रहे हैं।

मीटिंग में जो नवयुवक उद्योगपति आए उनमें मुख्य श्री अपूर्व आर्य , सिद्धार्थ बियानी, श्री अक्षय मंत्री, श्री अंकित मंत्री, श्री गिरिराज चांडक, श्रीकांत चांडक, श्री प्रणव साबू, श्री मुकुंद साबू, नेहा साबू, श्री पुष्पाल माहेश्वरी, श्री विभोर अग्रवाल, श्री गोपाल मालपानी एवं श्री सर्वेश साबू की सादर उपस्थिति रही है।

अंत में अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री नरेंद्र साबू ने नवयुवक उद्योगपतियों को बताया कि आप लोगों को अपने आचरण में अच्छा बर्ताव करना चाहिए जिससे आपका व्यापार और समाज को सही दिशा मिले। आपने बताया व्यापारी भाई को कमिटमेंट में पक्का रहना चाहिए समय की कीमत का ध्यान रखना चाहिए।

व्यापार में समय-समय पर नया बदलाव करना चाहिए जिससे व्यापार आपका बराबर अच्छा चलता रहे और आप जो भी पैसा कमाते हैं उसका 10 प्रतिशत हिस्सा लोक कल्याण में जाना चाहिए।

उपरोक्त मीटिंग में 'एसएमए' परिवार के अशोक गोयल, सुरेंद्र अग्रवाल, राजीव उमर, महेश पाटोदिया, राजकुमार चिरानिया, दुर्गेश टिबडेवाल, गौरव भसीन, मुकेश अग्रवाल, घनश्याम माहेश्वरी, मनोज अग्रवाल, संदीप अग्रवाल, रामकिशोर बजाज, संजय अग्रवाल आदि सदस्यों की सादर उपस्थिति में सम्पन्न हुई है।

विशेष आमंत्रित सम्माननीय सदस्यों में श्री किशन गाडोदिया, अतुल मंत्री, श्री विनोद बियानी, श्री अनिल साबू एवं श्री राजीव भाटिया की सादर उपस्थिति रही है।

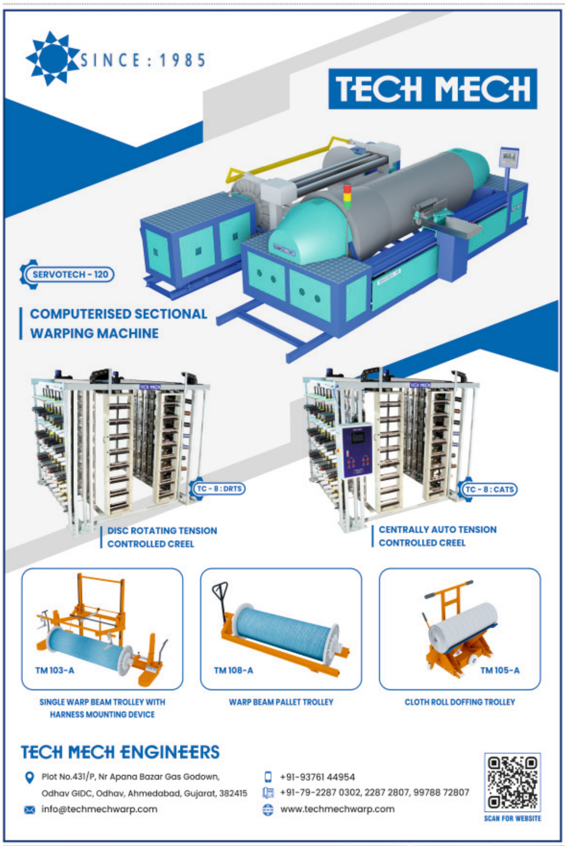

'स्वराज सूटिंग' का शुद्ध लाभ 80 प्रतिशत बढ़ा

भीलवाड़ा / स्थानीय प्रमुख वस्त्र निर्माता कंपनी 'स्वराज सूटिंग' ने इस वित्तीय तिमाही में उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है। निर्वाचन प्रपत्र में दर्ज नवीनतम वित्तीय विवरणों के अनुसार कंपनी का नेट प्रोफिट 80 फीसदी की जोरदार वृद्धि के साथ पिछले वर्ष की तुलना में काफी ऊपर पहुंच गया है। कंपनी प्रबंधन का कहना है कि यह बढ़ोतरी बेहतर मांग, लागत नियंत्रण और उत्पादन दक्षता में सुधार का परिणाम है।

सूत्रों के अनुसार बाजार में सूटिंग-शर्टिंग की मांग लगातार मजबूत हो रही है, विशेषकर मध्य व पश्चिम भारत में, जहां फैब्रिक की री-स्टॉकिंग तेजी से बढ़ी है। इसके साथ ही, कंपनी की नयी डिज़ाइन लाइन और आधुनिक मशीनरी से उत्पादन में तेजी आई है, जिससे लागत कम होने के साथ क्वालिटी में भी सुधार दर्ज किया गया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार कंपनी की बिक्री में भी स्थिर बढ़त देखी गई है, जिसने लाभ मार्जिन को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। घरेलू बाजार ही नहीं, बल्कि कुछ विशेष निर्यात ऑर्डरों में भी मजबूती आई है, जिससे कुल राजस्व को अतिरिक्त सपोर्ट मिला है।

कंपनी अधिकारियों ने कहा कि बेहतर वित्तीय परिणाम स्वराज सूटिंग की भविष्य की विकास योजना को और गति देंगे। आने वाले महीनों में कंपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाने, प्रोडक्ट पोर्टफोलियो विस्तृत करने और तकनीकी उन्नयन की दिशा में निवेश करने की तैयारी में है।

उद्योग विशेषज्ञों का मानना है कि भीलवाड़ा के वस्त्र बाजार में स्वराज सूटिंग का यह प्रदर्शन सकारात्मक संकेत है और यह ट्रेंड आगामी तिमाहियों में भी जारी रह सकता है।

बिहार चुनाव व छठ पूजा के बाद कामगारों की वापसी

ऑटोलूम उद्योग फिर पूर्ण क्षमता की ओर

कोल्हापुर/ बाबा खाडे

छठ पूजा और बिहार विधानसभा चुनावों के बाद अब बड़ी संख्या में बिहारी कामगार इचलकरंजी लौट रहे हैं, जिससे वस्त्रनगरी के ऑटोलूम उद्योग को राहत मिलने लगी है। इचलकरंजी के विभिन्न ऑटोलूम व संबद्ध उद्योगों में लगभग 12 हजार से अधिक बिहारी कामगार कार्यरत हैं। कामगारों की इस वापसी के साथ आने वाले सप्ताह से अधिकांश ऑटोलूम इकाइयों के 24 घंटे संचालन की संभावनाएँ मजबूत हो गई हैं।

इचलकरंजी के वस्त्रोद्योग में उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, असम और ओडिशा के कामगार बड़ी संख्या में हैं, जिनकी कुल संख्या 20 हजार से अधिक मानी जाती है। विशेष रूप से ऑटोलूम कारखानों में इन कामगारों पर निर्भरता काफी अधिक है, जहाँ उनके रहने की व्यवस्था भी की जाती है।

दिवाली के दौरान उद्योग कुछ दिनों के लिए बंद रहता है और बाद में धीरे-धीरे चलना शुरू होता है। परंतु इस वर्ष दिवाली के तुरंत बाद छठ पूजा और उसके बाद लगे बिहार विधानसभा चुनावों के कारण अधिकांश बिहारी कामगार अपने गांवों में ही रुके रहे। इस वजह से इचलकरंजी में ऑटोलूम उद्योग को कामगारों की भारी कमी का सामना करना पड़ा।

कामगार संकट के चलते कई ऑटोलूम इकाइयाँ सिर्फ 60-70 प्रतिशत क्षमता पर ही चल पाई। कुछ इकाइयों को 8 घंटे की एक शिफ्ट की बजाय 12 घंटे की दो शिफ्ट में काम करना पड़ा। इसका असर तैयार कपड़े के उत्पादन पर भी दिखाई दिया। वही फणी और ड्रॉपिंग जैसी गतिविधियों में भी बाधा आई और कई जगह पावरलूम को पूर्ण क्षमता से चलाना कठिन हो गया।

अब जबकि बिहार चुनाव संपन्न हो चुके हैं, कामगार ट्रेन से वापस लौट रहे हैं। कुछ कामगारों को रेल आरक्षण न मिलने से देरी हो रही है, लेकिन उद्योग जगत के अनुसार सभी कामगार इसी सप्ताह तक वापस पहुँच जाएंगे।

उद्योग प्रतिनिधियों का कहना है कि कामगारों की वापसी से दिवाली के बाद उत्पन्न कमी दूर होगी और आगामी दिनों में ऑटोलूम इकाइयाँ पुनः पूरी क्षमता से कार्यरत हो सकेंगी।

शादी -सीजन की तेज़ ग्राहकी: सर्दी के प्रकोप से वूलन रेडीमेड की मांग उफान पर

दिसंबर में मलमास से व्यापार सुस्त होने के संकेत

उज्जैन/अभिषेक भूता

शहर के वस्त्र बाजार में इस सप्ताह वैवाहिक सीजन की गहमा गहमी के चलते सभी प्रकार के वस्त्रों की बिक्री में उल्लेखनीय बढ़ोतरी दर्ज की गई। नए डिजाइनर साड़ियाँ, सलवार सूट, शर्टिंग, पोपलीन पेटीकोट, पटोला, लहंगा-चुन्नी और फैंसी साड़ियों की मजबूत मांग ने व्यापार में नई रौनक ला दी है। थोक से लेकर खुदरा बाजार तक व्यापारी अधिकाधिक कारोबार बढ़ाने पर केंद्रित हैं। नए डिजाइन और पैटर्न बाजार में तेजी से उतारे जा रहे हैं, जिससे बड़ी संख्या में ऑर्डर मिल रहे हैं तथा थोक बाजार से रवानगी भी युद्ध स्तर पर जारी है।

पुरुष वर्ग में विभिन्न क्वालिटी के कुर्ता पायजामा और आकर्षक डिजाइनर जैकेट का चलन खूब बढ़ा है। युवाओं में विशेष रूप से कुर्ता पायजामा और रंग बिरंगी जैकेट का ट्रेंड छाया हुआ है। वहीं युवतियों में पारंपरिक साड़ियों की मांग बढ़ी है, जो संकेत देती है कि आने वाले समय में भी साड़ियों की लोकप्रियता कम होने वाली नहीं है।

विशेषज्ञों का मानना है कि सिंथेटिक वस्त्रों की बिक्री केवल 6 दिसंबर तक ही बेहतर चलेगी, क्योंकि इसके बाद मलमास शुरू होने से विवाह समारोह रुक जाएंगे और बाजार गतिविधियाँ लगभग ठप पड़ सकती हैं। व्यापारियों का अनुमान है कि दिसंबर का महीना व्यापार के लिए चुनौतीपूर्ण साबित हो सकता है, जबकि रेडीमेड वूलन आइटमों की बिक्री इसी अवधि में चरम पर रहेगी।

सूरत के बड़े बाबा इंटरनेशनल के विजय जैन का कहना है कि दिसंबर में शादी सीजन की चमक सामान्य रह सकती है। 'गहना' साड़ीज़ के पवन जैन गोधा के अनुसार वे इस महीने नई डिजाइनों पर शोध कर रहे हैं, जबकि बेडशीट, बड़े कवर, रजाई, कंबल तथा पानीपत की आइटमों में बेहतर मांग बनी हुई है।

उज्जैन के प्रमुख दलाल मुकेश कटारिया के मुताबिक मुम्बईया शर्टिंग, नीतालीन, रौनक तथा सूरत की पगारिया सिंथेटिक्स की मांग बनाए हुए है। सूरत की हैंड फिनिश प्रिंटेड शर्टिंग, 'सोधर्म टेक्सटाइल्स' तथा लुधियाना की रेडीमेड वूलन आइटमों की बिक्री भी तूफानी स्तर पर है। थोक व्यापारी दूसरी बार बड़ा माल मंगवा रहे हैं। तिब्बती व्यापारियों की वूलन मार्केट इस बार पूरी तैयारी के साथ सजी हुई है।

मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार तेज़ ठंड से रबी की फसल को भी नुकसान की आशंका है, जिससे आगामी सीजन को लेकर व्यापारी वर्ग में चिंता बनी हुई है। इसके बावजूद वर्तमान सप्ताह में उज्जैन वस्त्र बाजार में मांग चरम पर है और व्यापारियों में उत्साह का माहौल देखने को मिल रहा है।

नीति-प्रोत्साहन से उम्मीद, मगर निर्यात और वैश्विक चुनौतियों से राह कठिन

जयपुर/मिरर ब्यूरो

राजस्थान में 2025 की शुरुआत में लागू हुई 'राजस्थान टेक्सटाइल एण्ड अपेरल्स पॉलिसी-2025' ने राज्य के वस्त्र एवं परिधान उद्योग को एक नई दिशा दी है। पहली बार इस पॉलिसी में रेडीमेड गारमेण्ट्स को शामिल किया गया है, जिससे राज्य की टेक्सटाइल वैल्यू-चेन कपास, सिंथेटिक/मेनमेड फाइबर, हैंडलूम, ऊन प्रोसेसिंग, तकनीकी वस्त्र, लेदर, फुटवियर व तैयार वस्त्र, सभी क्षेत्रों में विकास की संभावनाएं खुल गई हैं।

इस पॉलिसी के तहत सरकार ने उद्योगों को बड़े पैमाने पर वित्तीय व अन्य लाभ देने का प्रस्ताव रखा है- जैसे निवेश को आकर्षित करने के लिए सब्सिडी, 5 नए टेक्सटाइल पार्क स्थापित करना, ग्रीन-मैन्युफैक्चरिंग के लिए प्रोत्साहन, कुशल मानव संसाधन विकास, कच्चे माल की उपलब्धता और लॉजिस्टिक इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे आधारभूत सुधार। कुल मिलाकर, राजस्थान को भविष्य में टेक्सटाइल हब बनाने की दृष्टि से इसे बदलाव माना जा रहा है।

इसी बीच, राजधानी जयपुर में हाल ही में आयोजित 'टेक्सटाइल सोर्सिंग मीट-2025' ने भी टेक्सटाइल बाज़ार में एक नई ऊर्जा लाई है। इस दो-दिवसीय सोर्सिंग मीट में राज्य के निर्माता, ब्राण्ड्स और निर्यातक एकत्र हुए, जहाँ टिकाऊ और सर्कुलर फैशन, आधुनिक टेक्सटाइल इनोवेशन, और ट्रेड नेटवर्किंग को बढ़ावा दिया गया। इससे छोटे-बड़े कारोबारियों के लिए नए अवसर बने हैं।

लेकिन इतना उत्साह होने के बाद भी चुनौतियाँ कम नहीं हैं। राज्य की कुल निर्यात 2024-25 में लगभग 30 प्रतिशत घटकर 59,511 करोड़ रुपये रह गई है, जो पिछले साल 83,704 करोड़ रुपये थी। इस वार्षिक गिरावट का असर रेडीमेड गारमेंट्स, यार्न, और अन्य टेक्सटाइल उत्पादों पर पड़ा है।

विशेषज्ञों का कहना है कि यह कमी वैश्विक बाजार में मांग में गिरावट के साथ प्रतिस्पर्धा और अमेरिकी टैरिफ जैसे कारकों का परिणाम है। इन चुनौतियों के बावजूद, राज्य की नई पॉलिसी विशेष रूप से मैन्युफैक्चरिंग और एक्सपोर्ट-प्रोत्साहन संभावित निवेशकों और निर्यातकों के लिए आकर्षक बनी हुई है।

जयपुर व राजस्थान टेक्सटाइल उद्योग इस समय दोधारी तलवार पर खड़ा है एक ओर नीति-सोन्नित प्रोत्साहन, नई टेक्नोलॉजी व सोर्सिंग मीट की उपलब्धियाँ, दूसरी ओर निर्यात में सुस्ती और अंतरराष्ट्रीय दबाव। अगर वर्तमान प्रोत्साहनों को सही तरह से लागू किया गया और मार्केट रीकवरी हुई, तो अगले 2-3 वर्षों में जयपुर टेक्सटाइल उद्योग देश के प्रमुख परिधान एवं वस्त्र हब में एक बार फिर उभर सकता है।

ड्रेस मटेरियल की मांग बरकरार: साड़ी एवं लहंगा में लग्न की ग्राहकी

नई दिल्ली/प्रवीण राणा

ड्रेस मटेरियल में मांग बनी हुई है। मोटे मालों की मांग ज्यादा है। कॉटन प्रिंट कम बिक रहे हैं। पोपलीन, लाईनिंग, रूबिया, के साथ मोटे माल-स्पन एवं पशमिना प्लेन एवं प्रिंट की मांग बनी हुई है। थोक एवं खुदरा स्तर पर ग्राहकी अच्छी बनी हुई है।

व्यापारियों के अनुसार कॉटन साटन एवं रेयोन प्लेन एवं प्रिंट की मांग बनी हुई है। पोपलीन रंगीन में ग्राहकी अच्छी है। लाइनिंग में अच्छा काम निकला है। व्हाइट गुड्स की मांग थोड़ी कम है। ब्लाउज मटेरियल भी बिक रहा है।

नारायण ट्रेडिंग कम्पनी के श्री धनप्रकाश गुप्ता एवं नारायणदास गुप्ता के अनुसार ड्रेस मटेरियल में सभी तरह की वेरायटी बिक रही है। मोटे मालों स्पन एवं पशमिना प्लेन एवं प्रिंट की मांग है। कॉटन साटन प्लेन की मांग बनी हुई है। रेयोन प्लेन एवं प्रिंट में काम हो रहा है। कैम्ब्रिक प्लेन एवं प्रिंट की मांग कम है। पोपलीन एवं लाइनिंग में अच्छा काम हो रहा है।

नारायण के ब्राण्ड नाम से निर्मित कॉटन साटन, कैम्ब्रिक एवं रेयोन में ग्राहकी बनी हुई है।

साड़ी एवं लहंगा में लग्न की ग्राहकी - साड़ी एवं लहंगा में वैवाहिक सीजन की ग्राहकी पहले की तुलना में कमजोर पड़ी है। बम धमाके से ग्राहकी में गिरावट आई है फिर भी वेडिंग साड़ी, लहंगा-चुनरी, लांचा, सरारा, गरारा, गाउन आदि सभी तरह के वेडिंग कलेक्शन की मांग है। दिल्ली हैंडवर्क साड़ी एवं लहंगा में ग्राहकी अपेक्षाकृत ज्यादा है। इसके अलावा सभी उत्पादन केन्द्रों की साड़ी बिक रही है।

ग्राहकों का रुझान हैण्डवर्क में ज्यादा बना हुआ है। ब्राइडल साड़ी एवं लहंगा में दिल्ली हैंडवर्क लहंगा 6000/40,000 रुपए की रेंज में चल रहा है। मशीनवर्क का लहंगा 6000/10000 रुपए की रेंज में चल रहा है। नए फैब्रिक्स पर दिल्ली हैंडवर्क की साड़ी 1000/4000 रुपए की रेंज में काम हो रहा है। सिल्क सहित सिंथेटिक फैब्रिक्स के लहंगों की मांग है। खुदरा स्तर वेडिंग कलेक्शन की मांग है। व्यापारियों का कहना है कि आगे भी वेडिंग सीजन है इसलिए मांग बनी रहने की उम्मीद है।

दीपावली के बाद तेजी पकड़ता वस्त्रोद्योग

मांग, उत्पादन और बाजार की गतिशीलता ने बढ़ाई उम्मीदें

इचलकरंजी/अशोक बुगड़

महाराष्ट्र के प्रमुख टेक्सटाइल हब इचलकरंजी में दीपावली के रिकॉर्ड-तोड़ कारोबार के बाद उद्योग जगत एक नए उत्साह के साथ आगे बढ़ रहा है। विवाह सीजन और ठंड की शुरुआत ने बाजार में मजबूत मांग पैदा की है, जबकि कच्चे माल की कीमतों में उतार-चढ़ाव और स्थानीय महानगरपालिका चुनावों की सुगबुगाहट ने उद्योग में नई चर्चाओं को जन्म दिया है। इस बीच, उत्पादन से लेकर भुगतान तक, हर मोर्चे पर उद्योग एक संतुलित गति से आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है।

दीपावली अवकाश के बाद पावरलूम कारखानों में कारीगर पूरी संख्या में लौट आए हैं, जिससे उत्पादन की रफ्तार फिर पटरी पर आ गई है। मशीनें अब 24 घंटे चल रही हैं, और उद्योग जगत विवाह सीजन तथा सर्दी के लिए स्टॉक तैयार करने में व्यस्त है। दूसरी ओर, महाराष्ट्र की स्पिनिंग मिलें भी सक्रिय हैं, हालांकि कपास की कीमतों में अस्थिरता अब भी गंभीर चुनौती बनी हुई है। मिलें सतर्क होकर सीमित खरीदी कर रही हैं, लेकिन यार्न की मजबूत मांग के कारण वे अधिकतम क्षमता पर उत्पादन बनाए हुए हैं। निर्यात बाजार में भी आंशिक सक्रियता बनी हुई है, हालांकि मुनाफा मार्जिन पर दबाव कायम है। कपास उत्पादन में अनुमानित 20-25 प्रतिशत की कमी ने बाजार में अतिरिक्त दबाव पैदा किया है। हाजिर और वायदा दोनों बाजारों में कपास के भाव लगातार बढ़ रहे हैं, जिससे स्पिनिंग मिलों की लागत बढ़ रही है। बढ़ी हुई कीमतों का असर सूत की दरों में भी दिखा है बीते दिनों में यार्न रेट 3-5 प्रतिशत तक बढ़े हैं। हालांकि रेडीमेड गारमेंट निर्माताओं से निरंतर ऑर्डर मिलने के कारण यह बढ़ोतरी अभी स्वीकार्य बनी हुई है।

दीपावली के बाद ग्रे कपड़े के बाजार में भी उल्लेखनीय सुधार देखा गया है। विवाह सीजन, प्रीमियम डिज़ाइनों की मांग और प्रोसेसरों से बढ़ते ऑर्डरों ने ग्रे फैब्रिक की मांग को नई गति दी है। इचलकरंजी के पावरलूम उद्यमियों को मिल रहे जॉब रेट संतोषजनक हैं और बाजार में विक्रेताओं का पलड़ा फिलहाल भारी है।

रेडीमेड गारमेंट सेगमेंट में भी तेजी देखने को मिल रही है। शहरों और कस्बों में दूल्हा दुल्हन के परिधानों, पार्टी वियर और पारंपरिक ड्रेसों की बिक्री में जबरदस्त उछाल है। जीएसटी दरों में कटौती ने ग्राहकों को प्रीमियम उत्पादों की ओर और आकर्षित किया है। साथ ही, महाराष्ट्र में बढ़ती ठंड के कारण बाजारों में गर्म कपड़ों की बिक्री भी तेज हो गई है स्वेटर, जैकेट, ऊनी टॉप्स और शॉल की मांग लगातार बढ़ रही है।

हालाँकि उत्पादन और बिक्री में तेजी है, लेकिन भुगतान की स्थिति मिश्रित बनी हुई है। बड़े खरीदार भुगतान समय पर कर रहे हैं, जिससे वर्किंग कैपिटल का प्रवाह बना हुआ है। वहीं, छोटे और मध्यम खरीदारों से भुगतान में देरी देखी जा रही है, खासकर उन क्षेत्रों से जहाँ बेमौसम बारिश ने कृषि अर्थव्यवस्था पर प्रभाव डाला है। उद्योग एनपीए जोखिम से बचने के लिए क्रेडिट प्रबंधन को सख्त कर रहा है।

स्थानीय महानगरपालिका चुनाव भी उद्योग पर अप्रत्यक्ष असर डाल रहे हैं। चुनावी प्रक्रिया के कारण कुछ नीतिगत फैसले धीमे पड़ सकते हैं और कुछ कामगारों का ध्यान चुनाव गतिविधियों से प्रभावित हो सकता है। उद्योग जगत को उम्मीद है कि चुनाव बाद आने वाली स्थानीय सरकार उद्योग से जुड़ी समस्याओं बुनियादी ढाँचा, प्रदूषण नियंत्रण, अपशिष्ट प्रबंधन और कुशल श्रमिक उपलब्धता पर प्राथमिकता देगी।

इस बीच, केंद्र सरकार की पीएलआई योजना की अंतिम तिथि बढ़ाए जाने से राज्य के उद्यमी एमएमएफ और टेक्निकल टेक्सटाइल में निवेश करने पर गंभीरता से विचार कर रहे हैं, जिससे आने वाले वर्षों में विविधीकरण और आधुनिकीकरण को नई दिशा मिलेगी।

कुल मिलाकर, इचलकरंजी का वस्त्रोद्योग आज चुनौतियों और अवसरों के संगम पर खड़ा है। मांग, उत्पादन और बाजार की सक्रियता उद्योग को आगे बढ़ा रही है।

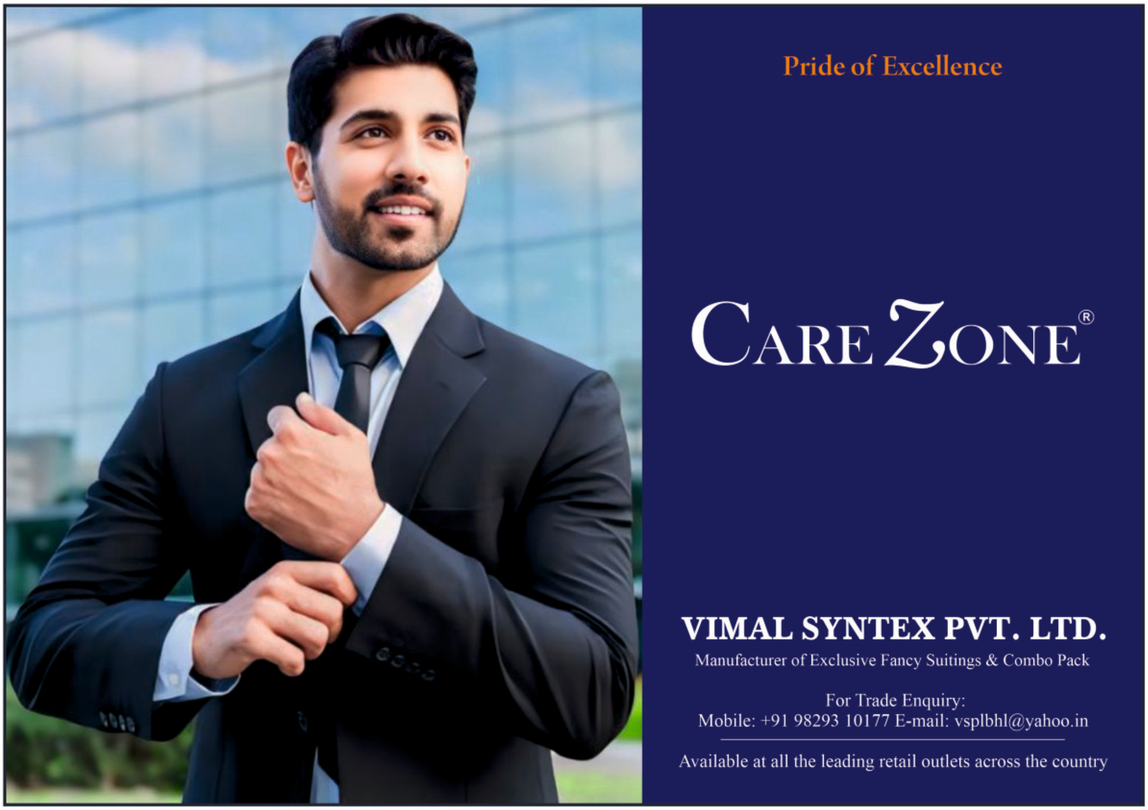

ब्लैंडेड फैब्रिक्स की मांग निखरी : कॉटन कपड़ों की बिक्री में स्थिरता

मुम्बई/ मिरर ब्यूरो

थोक कपडा बाजार में कारोबार में गति नहीं है। ग्राहकी में करंट नहीं है। बाजार में ग्राहकी की प्रतीक्षा बढ़ी है। कारोबार व्यापारियों की कसौटी पर खरा नहीं उतर रहा है। दीपावली के बाद कपड़ों में कारोबार अच्छा होने की उम्मीद व्यक्त की गई थी। करीब एकाध महीने बीतने के बाद भी कपडा बाजार में ग्राहकी का ग्राफ बढ़ने के बदले स्थिर रहा है। वैवाहिक सीजन के कारण कपड़ों में खुदरा ग्राहकी अच्छी रही है। सूटिंग, शर्टिंग, उपहार के आइटमों, साड़ी और ड्रेस मटेरियल, भिन्न-भिन्न प्रिंटेड कपडों सहित उन सभी किस्म के कपड़ों में ग्राहकी दिखाई दे रही है, जिसकी इन दिनों में विशेष मांग रहती है। टेक्सटाइल का निर्यात कमजोर है। कपड़ों का उत्पादन घटा है।

विंटर की हैवी क्वालिटी कपड़ों में कारोबार कम और स्टॉक भी कम है। वीविंग इकाइयों में कामकाज घटा है। भिवंडी में कपड़ों का उत्पादन आज भी 50 प्रतिशत से कम है। लूमों पर कारीगरों की कमी है। कपड़ों का उत्पादन कम होने के बावजूद तैयार ग्रे कपड़ों का उठाव जैसा होना चाहिए वैसा नहीं हो रहा है। स्कूल यूनिफॉर्म की सीजन सामने है। दिसम्बर महीने से इसकी तैयारियां जोर पकड़ सकती है। प्रोसेसिंग इकाइयां पूरी क्षमता के साथ नहीं चल रही है। कॉटन कपड़ों के बदले ब्लैंडेड कपड़ों में अब कामकाज बढ़ रहा है। रूई सस्ती है, फिर भी कॉटन यार्न टाइट लग रहा है, जबकि बाजार में कॉटन यार्न की मांग नहीं बढ़ी है, दूसरी ओर सिंथेटिक यार्न के भाव स्थिर हो गए है।

कपड़ा बाजार में पुरानी उधारी लौट रही है। हकीकत में कपड़ों की जब सबसे अधिक बिक्री होती है, ऐसी वैवाहिक सीजन भी शुरू हो चुकी है, फिर भी थोक कपड़ों में कारोबार पटरी पर नहीं लौट सका है। काटन ग्रे कपडों के भाव कुछ सुधरे है, परंतु इस भाव पर लेवाली नहीं है। जानकारों का कहना है कि बाजार में फैंसी और विंटर सीजन के हैवी क्वालिटी कपड़ों का बहुत अधिक स्टॉक नहीं है।। अभी कपड़ों में खुदरा स्तर पर जो कारोबार हो रहा है, वह अधिकतर सीजन में चलने वाले कपड़ों की है। सूटिंग एवं शर्टिंग की बिक्री थोड़ी सुधरी है, परंतु यह सीजन जैसा नहीं है। गारमेण्टर्स की शर्टिंग की मांग अधिक नहीं है। गारमेण्ट कारखानों में कामकाज फिर से जोर पकड़ने लगा है।

साड़ियों के साथ लेडीज सूट्स में वैवाहिक सीजन की खुदरा ग्राहकी का समर्थन जोरदार है। आकर्षक डिजाइनों और नई रेंज की साड़ियों तथा सलवार एवं सूट के कपड़ों में बिक्री बढ़ने से कारोबार में उत्साह है। जोरदार मांग के कारण सभी रेंज की साड़ियों में अच्छा कारोबार हो रहा है। कारोबारियों को ऐसी ग्राहकी आने वाले दिनों में रहने की उम्मीद है। पेटीकोट फैब्रिक की मांग बढ़ी है। ब्लाउज मटेरियल में फैंसी वेराइटी की मांग है। अब सिंथेटिक और फैंसी साड़ियों के साथ ब्लाउज पीस अटैच होने से रूबिया की मांग में कोई बड़ा सुधार नहीं हो रहा है। पोलिएस्टर मिक्स ब्लैंडेड फैब्रिक्स की मांग में जरूर बढ़ रही है और कॉटन कपड़ों की मांग में स्थिरता है।

कपड़ा उत्पादकों ने अब कॉटन के साथ विविध ब्लैंडेड कपड़ों के उत्पादन और विपणन पर ध्यान देना शुरू कर दिया है। ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करने और नये उत्पादों को निरंतर बाजारों में पेष करने की कोशिश फलीभूत होती नजर आ रही है। यही कारण है कि भारतीय बाजारों के साथ वैश्विक बाजारों में विस्कोस, लाइक्रा और लिनन ब्लैंडेड कपड़ों की बढ़ रही मांग के कारण ऐसे कपड़ों की बिक्री बढ़ाने के लिए भारतीय कपडा मैन्युफैक्चरर्स को एक बड़ा बाजार मिला है। देश में पहले से ही कई मिलों में लिनन ब्लैंड और लिनन लुक्स कपड़ों का उत्पादन हो रहा है। भारत लिनन यार्न और फैब्रिक्स का बड़ा आयातक है। देश में घरेलू उत्पादन की संभावनाएं मौजूद है।

टेक्सटाइल उद्योग का वैश्विक स्तर पर विस्तार हो रहा है। विशेषकर टेक्निकल टेक्सटाइल का निर्यात टॉप 10 बाजारों के अलावा अब कनाडा, सउदी अरब, रूस, मोरक्को, इजराइल, ओमान, जापान, तंजानियां, पेरू, स्विटजरलैंड, अर्जेंटीना इत्यादि देशों में बढ़ रहा है। यूके में निर्यात दोगुना करने की संभावना है। अब बाजार का विविधीकरण करने की जरूरत है। लैटिन अमेरिका, अफ्रीका, सेंट्रल एशिया, मीडिल ईस्ट जैसे देशों में निर्यात बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है। अप्रैल से अगस्त 2025 के दौरान टेक्निकल टेक्सटाइल का निर्यात 143.12 करोड़ अमेरिकी डॉलर था। जो पूर्व वर्ष की समान अवधि में 137.96 करोड़ रूपये था। इस तरह इसमें 3.6 प्रतिशत की बढ़ोतरी नजर आ रही है।

कपड़ा और गारमेण्ट का निर्यात कमजोर है। अमेरिका भारत के लिए एक बड़ा बाजार है। यदि अमेरिका भारत पर पहले की तरह 25 प्रतिशत टैरिफ कर देता है, तो निर्यात में वृद्धि होगी। लेकिन टैरिफ की दर 20 प्रतिशत से नीचे रहे तो भारत को बड़े ऑर्डर मिल सकते है। भारत और अमेरिका के बीच कुछ ही समय में टैरिफ पर कोई समाधान होने की संभावना दिखाई दे रही है। ऐसा होने पर कपड़ा उद्योग को बड़ा लाभ होगा। जब से भारत पर हैवी टैरिफ लादा गया है तब से यह क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। भारतीय निर्यातकों ने इस बीच दूसरे वैकल्पिक बाजारों को खोजा और उन बाजारों में निर्यात किया है, ताकि अमेरिकी बाजार के निर्यात की कमी इन बाजारों से दूर की जा सके।

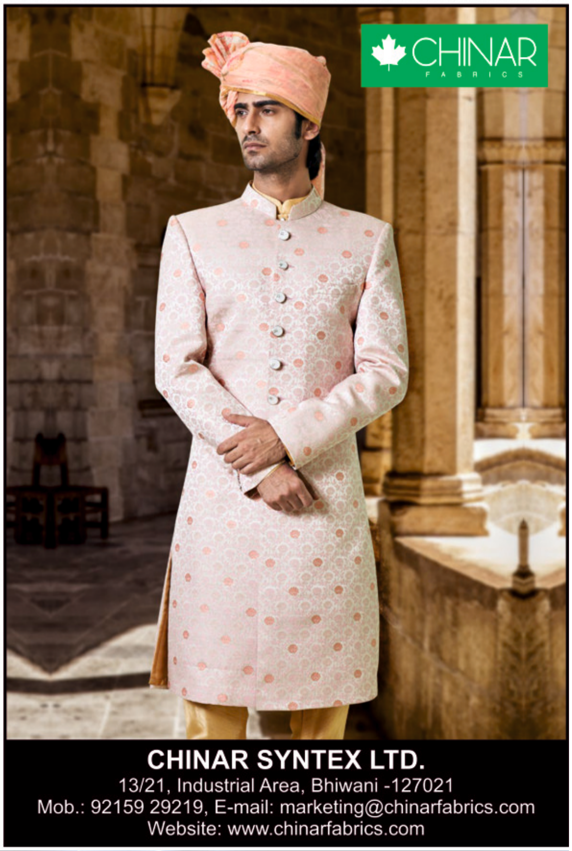

हम मानते हैं
बच्चे देश का भविष्य हैं.
वालजी यूनिफॉर्म के आरामदायक फैब्रिक्स और आकर्षक डिजाइन्स बच्चों की स्कूल लाइफ में उन्हें स्मार्ट और प्रजेन्टेबल बनाकर उनका आत्मविश्वास बढ़ाते हैं।
PRESENTING
INDIA'S UNIFORM EXPERTS
office@valji.in | www.valji.in
SINCE 1981
DARSHAN
Valji®

सोलापुर यूनिफॉर्म एवं गारमेण्ट एक्जीबिशन की प्रमुख झलकियां

9th UNIFORM MANUFACTURER'S FAIR 2025
MUMBAI | MAHARASHTRA
26th 27th & 28th Nov,2025

'SGMA' द्वारा आयोजित '9वां यूनिफॉर्म एवं गारमेण्ट फेयर' भव्य सफलता के साथ सम्पन्न

4000 से अधिक बिजनिस बायर्स ने की शिरकत : एक्जीबिटर्स को मिला शानदार रिस्पोंस

मुंबई/ नेस्को एग्ज़िबिशन सेंटर में महाराष्ट्र शासन के वस्त्र विभाग एवं श्री सोलापुर रेडीमेड टेक्सटाइल मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन द्वारा 9वां इंटरनेशनल यूनिफॉर्म गारमेंट फेयर भव्य रूप से आयोजित किया गया। इस मेगा फेयर का उद्घाटन महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष श्री राहुल नार्वेकर के हाथों सम्पन्न हुआ। उद्घाटन के बाद उन्होंने विभिन्न स्टॉलों का अवलोकन किया एवं उत्पादकों से बातचीत करते हुए सोलापुर की उभरती टेक्सटाइल क्षमता की प्रशंसा की।

इस अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी में देश-विदेश के 150 से अधिक राष्ट्रीय ब्रांडों ने भाग लिया। प्रदर्शनी में 30,000 से अधिक यूनिफॉर्म डिज़ाइन तथा 15,000 से अधिक नवीन फैब्रिक इनोवेशन को विशेष रूप से प्रदर्शित किया गया। यह आयोजन न केवल भारत बल्कि वैश्विक स्तर पर सोलापुर की पहचान बढ़ाने वाला साबित हुआ।

सोलापुर टेक्सटाइल इंडस्ट्री का बदलता स्वरूप- माननीय अध्यक्ष ने कहा कि इस बार फेयर में नए-नए टेक्नोलॉजी बेस्ड उत्पाद, उच्च गुणवत्ता के फैब्रिक्स और नवाचार पर आधारित डिज़ाइन देखकर स्पष्ट है कि सोलापुर का कपड़ा उद्योग तेजी से आधुनिकता की ओर बढ़ रहा है।

उन्होंने यह भी कहा कि सोलापुर में तैयार होने वाला उच्च गुणवत्ता का यूनिफॉर्म आज पूरे देश में इस्तेमाल हो रहा है, यह सोलापुर और महाराष्ट्र के लिए गर्व की बात है।

उद्योग जगत ने इस प्रदर्शनी को सोलापुर टेक्सटाइल इंडस्ट्री की ब्रांड वैल्यू बढ़ाने वाला ऐतिहासिक कदम बताया है। सोलापुर का रेडीमेड टेक्सटाइल उद्योग जो कभी केवल स्थानीय बाजारों तक सीमित था, आज पूरे देश के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय बाजारों में मजबूती से अपनी जगह बना रहा है। यहाँ निर्मित उत्पाद गुणवत्ता, टिकाऊपन और किफायत के कारण तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं।

उद्योगों को नए अवसर, निर्यात को नई दिशा

फेयर में शामिल उद्योगपतियों ने कहा कि ऐसे अंतरराष्ट्रीय आयोजन उन्हें सीधे नए ग्राहकों से जोड़ते हैं, जिससे व्यापार का विस्तार होता है और निर्यात को भी नई गति मिलती है।

टेक्सटाइल उद्योग से जुड़े विशेषज्ञों ने बताया कि यह फेयर उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय प्लेटफॉर्म देता है, निर्यात-उन्मुख उत्पादन को बढ़ावा मिलता है, ब्रांडिंग और मार्केटिंग में कंपनियों को मदद मिलती है एवं निवेश की संभावनाएँ बढ़ती हैं। महाराष्ट्र विशेषकर सोलापुर के लिए यह आयोजन विकास का नया अध्याय है।

सोलापुर के विकास में जनप्रतिनिधियों की महत्वपूर्ण भूमिका- दक्षिण सोलापुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री सुभाष देशमुख के योगदान की इस अवसर पर विशेष रूप से सराहना की गई। उद्योग जगत ने कहा कि उनके प्रयासों के कारण सोलापुर में उद्योगों के लिए सकारात्मक वातावरण तैयार हुआ है। उन्होंने टेक्सटाइल सेक्टर में कई महत्वपूर्ण योजनाओं और निवेश को बढ़ावा दिया, जिससे आज सोलापुर का नाम राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय टेक्सटाइल मानचित्र पर मजबूती से उभर रहा है।

कार्यक्रम में विशिष्ट जनों की उपस्थिति- इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में कई विशिष्ट अतिथि शामिल हुए जिनमें प्रमुख रूप श्री सुशील गायकवाड (रेजिडेंट कमिश्नर), श्री प्रियव्रत मफतलाल (वाइस प्रेसिडेंट-मफतलाल इंडस्ट्रीज) एवं श्री निलेश शाह (एसजीएमए-पूर्व अध्यक्ष) उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने सोलापुर के उद्योग जगत द्वारा किए जा रहे नवाचारों और उच्च गुणवत्ता वाले यूनिफॉर्म उत्पादों की सराहना की।

फेयर सोलापुर की टेक्सटाइल इंडस्ट्री का उज्ज्वल भविष्य- 9वें इंटरनेशनल यूनिफॉर्म गारमेण्ट फेयर ने यह स्पष्ट कर दिया कि सोलापुर यूनिफॉर्म और टेक्सटाइल मैन्युफैक्चरिंग का एक प्रमुख केंद्र बन चुका है। अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता, व्यापक डिज़ाइन रेंज और लगातार विकसित होती टेक्नोलॉजी इस उद्योग को नई ऊँचाइयों पर ले जा रही है। यह आयोजन सोलापुर को ग्लोबल यूनिफॉर्म हब बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

फेयर में पुणे, नासिक, सूरत, मुंबई सहित देशभर से उत्पादकों ने भाग लिया। इस फेयर के माध्यम से सोलापुर ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया है कि वह भारतीय टेक्सटाइल इंडस्ट्री का भविष्य है और आने वाले वर्षों में वैश्विक मंच पर और भी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराएगा।

देश के अन्य शहरों को नहीं मिल रहीं जो सुविधाएँ, वे सोलापुर को मिल रहीं –श्री सुभाष देशमुख

सोलापुर 9वें अंतरराष्ट्रीय यूनिफॉर्म मैन्युफैक्चरर्स फेयर के उद्घाटन समारोह में भाजपा सांसद एवं पूर्व कपड़ा मंत्री (महाराष्ट्र) श्री सुभाष देशमुख ने सोलापुर की औद्योगिक संभावनाओं और विकास पर महत्वपूर्ण बात कही। उन्होंने कहा कि देश के कई बड़े शहरों को जो सुविधाएँ और अवसर नहीं मिलते, वे सोलापुर को मिल रहे हैं, और यही कारण है कि शहर तेजी से औद्योगिक रूप से आगे बढ़ रहा है।

देशमुख ने बताया कि वर्ष 2017 के बाद से सोलापुर यूनिफॉर्म, टेक्सटाइल, गारमेण्ट एवं निर्माण क्षेत्र का प्रमुख केंद्र बनकर उभरा है। शहर का भौगोलिक महत्व, बेहतर परिवहन व्यवस्था, उपलब्ध कुशल जनशक्ति और उद्योगों के लिए अनुकूल माहौल इसे निवेश के लिए पसंदीदा स्थान बना रहा है। इन कारणों से सोलापुर में रोजगार के नए अवसर भी निरंतर बढ़ रहे हैं।

कार्यक्रम में मीडिया से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की नई नीतियों, औद्योगिक पैकेज, मूलभूत सुविधाओं के विकास और सिंचाई जलसंधारण परियोजनाओं ने जिले में उद्योगों को मजबूती दी है। केंद्र और राज्य सरकार के संयुक्त प्रयासों से सोलापुर में कई बड़े औद्योगिक प्रोजेक्ट तेजी से आकार ले रहे हैं।

यूनिफॉर्म उद्योग के भविष्य को लेकर उन्होंने कहा कि देश में स्कूलों, संस्थानों और औद्योगिक क्षेत्रों में यूनिफॉर्म की मांग लगातार बढ़ रही है। सोलापुर में निर्मित यूनिफॉर्म और फैब्रिक अपनी गुणवत्ता के कारण राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना चुके हैं। आने वाले वर्षों में इस क्षेत्र में निर्यात संभावनाएँ भी काफी बढ़ेंगी।

मीडिया पार्टनर के रूप छाया 'टेक्सटाइल मिरर'

'एसजीएमए' द्वारा आयोजित इस यूनिफॉर्म एवं गारमेण्ट फेयर का 'टेक्सटाइल मिरर' मीडिया पार्टनर था, जिसने फेयर के दौरान अपने प्रदर्शन एवं इण्टरव्यू के माध्यम से काफी सुर्खियां बटोरी। काफी विजिटर्स इसके पाठक भी बने।

वस्त्र उद्योग के इतिहास में पहली बार 'एसजीएमए' ने

मफतलाल इंडस्ट्रीज के सीईओ श्री एम.बी. रघुनाथ को 'यूनिफॉर्म रिवॉल्यूशनरी अवॉर्ड' से नवाजा

सीईओ श्री एम.बी. रघुनाथ

मुंबई/स्थानीय उद्योग पहचान को नए आयाम देने और यूनिफॉर्म एवं रेडीमेड गारमेंट उद्योग को मजबूती प्रदान करने में मफतलाल इंडस्ट्रीज लिमिटेड के सीईओ श्री एम.बी. रघुनाथ का योगदान ऐतिहासिक माना जा रहा है। इसी महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए एसजीएमए (सोलापुर गारमेण्ट मेन्युफेक्चरर्स एसोसिएशन) ने उन्हें 'यूनिफॉर्म रिवॉल्यूशनरी अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान अपने आप में अभूतपूर्व है, क्योंकि देश के इतिहास में पहली बार किसी एक व्यक्ति को यूनिफॉर्म क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए यह प्रतिष्ठित अवॉर्ड दिया जा रहा है।

सोलापुर, जो वर्षों तक केवल तौलिया और बेडशीट निर्माण के लिए जाना जाता था, आज यूनिफॉर्म एवं गारमेंट निर्माण के एक बड़े वैश्विक केंद्र के रूप में उभर चुका है। इस परिवर्तन के पीछे श्री रघुनाथ की दूर दृष्टि, नवाचार और उद्योग को प्रोत्साहन देने की निरंतर पहल प्रमुख रही है। उनके प्रयासों से न सिर्फ सोलापुर की औद्योगिक छवि बदली, बल्कि हजारों लोगों के लिए रोजगार के नए द्वार भी खुले हैं।

'एसजीएमए यूनिफॉर्म एवं गारमेंट फेयर' को नई ऊर्जा देने में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके मार्गदर्शन और प्रेरणा से यह फेयर लगातार कई वर्षों से आयोजित हो रहा है और हर वर्ष नई ऊंचाइयों को छू रहा है। यह मंच आज यूनिफॉर्म उद्योग के व्यापारियों, निर्माताओं और ब्रांडों के लिए सबसे बड़ा प्लेटफॉर्म बन चुका है।

श्री रघुनाथ हमेशा यूनिफॉर्म उद्योग में आधुनिक तकनीक, नए बिजनेस मॉडल और नवाचार को प्रोत्साहित करते रहे हैं। उनके सुझावों और पहलों से सोलापुर में यूनिफॉर्म से जुड़े छोटे और मझोले उद्यमों को नई दिशा मिली है। उद्योग जगत का मानना है कि उनके 'नए आइडिया' ने इस सेक्टर की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ाई है और इसे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मजबूती दी है।

एसजीएमए ने कहा कि यूनिफॉर्म सेक्टर में उन्होंने जो बदलाव लाए हैं, वह अपने आप में एक क्रांति से कम नहीं है। इसलिए उन्हें 'यूनिफॉर्म रिवॉल्यूशनरी अवॉर्ड' दिया जाना अत्यंत गर्व और सम्मान की बात है। यह सम्मान न केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि है, बल्कि पूरे सोलापुर और यूनिफॉर्म उद्योग के विकास की कहानी का एक स्वर्णिम अध्याय भी है।

इस पहल से उम्मीद है कि भविष्य में सोलापुर यूनिफॉर्म एवं गारमेंट उद्योग देश का नेतृत्व करने वाली प्रमुख औद्योगिक शक्ति के रूप में और अधिक तेजी से उभरेगा।

CMAI Organizes the 3rd North India Garment Fair (NIGF 2025) to New Delhi, Aiming to Drive Growth in the Northern Apparel Market

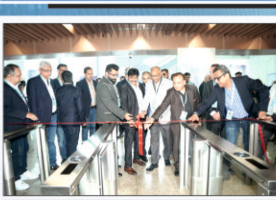

New Delhi, November 25, 2025: The 2nd North India Garment Fair (NIGF 2025) by the Clothing Manufacturers Association of India (CMAI) has commenced on November 25 till November 27, 2025, at the Yashobhoomi Convention Center (IICC), Sector 25, Dwarka, New Delhi. NIGF 2025 features over 125 exhibitors showcasing a diverse array of menswear, womenswear, and kidswear.

The inauguration ceremony was graced by leading retailers, including Abhishek Gupta (Gupta Creations Pvt Ltd, New Delhi); Naman Narang (Narang Garments, New Delhi); Ravindra Arora (Ravi Exclusif & Janaab, Amritsar); Alok & Heramb Aggarwal (A to Z Kids House, Hisar); Laxmikant Biyani (Sagar, Sikar) among others.

Industry players such as Santosh Katariya, President, CMAI; Rohit Munjal, Vice President, CMAI; Naveen Sainani, Hon. Gen. Secretary, CMAI; Mukesh Jain, Hon. Jt. Gen. Secretary & Chairman, North India Garment Fair; Jagdish Harwani, Jt. Chairman, North India Garment Fair; Anand Chokshi, Member, North India Garment Fair, and Rahul Mehta, Chief Mentor, CMAI were in attendance. The event also saw the participation of numerous other office bearers of CMAI, enhancing the significance of the occasion.

Santosh Katariya, President, CMAI, expressed, "NIGF 2025 aims to harness the immense potential of the Northern market, offering a dynamic platform for exhibitors to engage with buyers, discover new brands, and build strong business partnerships. Further, with an expected attendance of over 5,000 trade visitors, the fair will serve as a powerful networking hub for connecting buyers from across India with industry frontrunners."

NIGF 2025 features a diverse array of leading brands including Watcher Shirts, Denis Parkar, Stil-O-Stitch, Scakhi, Juniper, Little Kangaroo, Kittens and many others from manufacturing hubs like Mumbai, Surat, Jaipur, Ahmedabad, Tirupur, Ludhiana, Kolkata including Delhi/NCR. Retailers from across the country are expected to attend the North India Garment Fair 2025, making it a significant event for the industry.

About CMAI

The Clothing Manufacturers Association of India (CMAI) is the most representative association of the Indian apparel industry having over 7,000 members and serving more than 50,000 Retailers. Its Membership consists of Manufacturers, Exporters, Brands, and ancillary industry. CMAI advocates regarding policies and also guides and encourages its members on ESG related matters and initiatives. In 2019, CMAI launched the SU.RE initiative to encourage members to embrace sustainability.

Established over sixty years ago, CMAI has contributed immensely towards development of the industry. In 1978, CMAI had led the creation of the Apparel Export Promotion Council (AEPC). CMAI is also authorised by the Government of India to issue Certificate of Origin (Non-Preferential) to Exporters. CMAI is the only Indian Association that represents the entire Indian Apparel Industry & Trade on prestigious international forums such as International Apparel Federation (IAF) headquartered in Netherlands.

चेक बाउंस पर नए सख्त नियम

एमएसएमई व छोटे व्यापारियों को बड़ी राहत, कैट ने किया स्वागत

सूरत/ देश के व्यापार जगत, विशेषकर एमएसएमई और छोटे व्यापारियों के लिए राहत भरी बड़ी खबर है। केंद्र सरकार ने चेक बाउंस से जुड़ी कानूनी जटिलताओं, पूँजी फँसने और भुगतान अनुशासन की समस्या को देखते हुए 1 अप्रैल 2025 से 'चैक बाउन्स रूल्स 2025' लागू कर दिए हैं। इन नियमों को व्यापारिक समुदाय में बेहद सकारात्मक निर्णय माना जा रहा है। कॉन्फ़ेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स की टेक्सटाइल एवं गारमेंट कमेटी ने इन बदलावों को उद्योग के हित में 'बहुत ही जरूरी और दूरदर्शी कदम' बताया है। कमेटी के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री चम्पालाल बोथरा ने कहा कि नए नियम व्यापारियों के लिए त्वरित न्याय, पारदर्शिता और पूँजी की सुरक्षा सुनिश्चित करेंगे।

श्री बोथरा ने स्पष्ट कहा कि अब तक चेक बाउंस मामलों में न्याय की प्रक्रिया लंबी व जटिल थी, जिसके कारण छोटे व्यापारियों की पूँजी महीनों कई बार वर्षों तक फँस जाती थी। इससे न केवल व्यापार की गति प्रभावित होती थी बल्कि डिफाल्टरों का मनोबल भी बढ़ता था। नए प्रावधान इन चुनौतियों को काफी हद तक खत्म करेंगे।

नए नियमों की प्रमुख बातें इस प्रकार हैं-

1. दो वर्ष की जेल और दोगुना जुर्माना

जानबूझकर या लापरवाही से चेक बाउंस होने पर अब अधिकतम 2 वर्ष की सजा, चेक राशि के दोगुने तक जुर्माना या दोनों दंड दिए जा सकते हैं। इससे भुगतान अनुशासन में मजबूती आएगी।

2. पूरी तरह ऑनलाइन शिकायत

व्यापारी अब चेक बाउंस की शिकायत पूरी तरह ऑनलाइन कर सकेंगे। इससे छोटे शहरों और ग्रामीण व्यापारियों को बड़ी राहत मिलेगी और प्रक्रिया तेज व सरल होगी।

3. डिजिटल सबूतों को मान्यता

एसएमएस, ई-मेल, बैंक अलर्ट और अन्य इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड अब अदालत में वैध सबूत माने जाएंगे। इससे फर्जी बचाव व झूठे दावों पर रोक लगेगी।

4. शिकायत की समय सीमा 1 महीने से बढ़ाकर 3 महीने

अब प्रभावित व्यापारी को शिकायत दर्ज करने के लिए अधिक समय मिलेगा, इससे न्याय प्रक्रिया अधिक व्यावहारिक बनेगी।

5. तीन बार चेक बाउंस पर बैंक खाता फ्रीज़

यदि किसी खाते से लगातार तीन बार चेक बाउंस होता है, तो बैंक उस खाते को अस्थायी रूप से फ्रीज़ कर सकेगा या चेक-बुक सुविधा सीमित कर सकेगा। यह नियम लगातार डिफाल्टरों पर सीधी कार्रवाई करेगा।

श्री चम्पालाल बोथरा ने कहा कि ये सुधार एमएसएमई की सबसे बड़ी समस्या पूँजी का फँसना को दूर करेंगे और व्यापारिक विश्वास व अनुशासन को मजबूत बनाएंगे। उन्होंने सरकार और बैंकों से आग्रह किया कि इन नियमों को कठोरता और तेजी से लागू किया जाए ताकि व्यापारियों को तत्काल लाभ मिल सके।

साथ ही, उन्होंने सुझाव दिया कि भविष्य में, यूपीआई, नेफ्ट, आरटीजीएस जैसे डिजिटल भुगतान विवादों के समाधान के लिए भी इसी तरह की त्वरित और पारदर्शी प्रक्रिया बनाई जानी चाहिए।

कैट की टेक्सटाइल एवं गारमेंट कमेटी ने दोहराया कि वह हमेशा देश के व्यापारिक समुदाय की समस्याओं को प्राथमिकता से उठाती रहेगी और आवश्यक नीति-सुधारों के लिए सरकार के साथ संवाद जारी रखेगी।